

स्काउट गाइड ज्योति



राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की आमुख पत्रिका
वर्ष-22, अंक-02, अक्टूबर, 2021 (कुल पृष्ठ-28) मूल्य: ₹ 15/-



जागरूकता
एवं स्वच्छता
अभियान में
शिरकत करते
स्काउट्स व गाइड्स



गतिविधियों की चित्रमय झलकियाँ



अलवर में पंचायत चुनाव के दौरान सेवा देते हुए स्काउट गाइड एवं लीडर

सेवा कार्यों के लिए रोवर स्काउट्स को सम्मानित करते झुंझुनू के समाजसेवी



स्वच्छता व सफाई अभियान के तहत सेवा देते सीकर के रोवर्स

राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करते सीकर के स्काउट्स



श्रीगंगानगर के स्काउट्स जोटा जोटी जम्बूरी में सहभागिता करते हुए

स्काउट गाइड ज्योति
वर्ष : 22 अंक : 02
अक्टूबर, 2021

सलाहकार मण्डल

डॉ. जे.सी. महान्ति

आई.ए.एस. (से.नि.)

स्टेट चीफ कमिश्नर



डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी

आई.ए.एस.

स्टेट कमिश्नर (स्काउट)



रूक्मणि आर. सिहाग

आई.ए.एस.

स्टेट कमिश्नर (गाइड)



मुग्धा सिन्हा

आई.ए.एस.

स्टेट कमिश्नर (रेंजर)



सांवरमल वर्मा

आई.ए.एस.

स्टेट कमिश्नर (कब)



निर्मल पंवार

स्टेट कमिश्नर (रोवर)



सिद्धी कृष्णा कौशिक

स्टेट कमिश्नर (बुलबुल)



मनोज जैन

राज्य कोषाध्यक्ष

सम्पादक मण्डल

तेजराज सिंह

स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)



रविनन्दन भनोत

राज्य सचिव



डॉ. सुषमा सिंघवी

सहा.स्टेट कमिश्नर (स्काउट गाइड ज्योति)

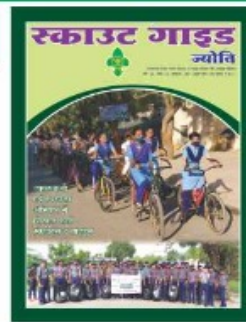


गिरधारी लाल शर्मा

सदस्य, राज्य परिषद

सहायक सम्पादक

नीरज जैन



इस अंक में

विषय	पृष्ठ संख्या
● दिशाबोध	4
● सम्पादकीय	4
● विशेष : नव-निर्वाचन	5
● वर्ल्ड स्काउट कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व	6
● राज्य कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न	7
● अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोटा का प्रतिनिधित्व	7
● आओ भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना करें	8
– विजय सिंह माली	
● स्काउटिंग में गीतादर्शन	10
– देवेन्द्र पण्ड्या	
● शिक्षा में स्काउटिंग का महत्व	13
– चांद मोहम्मद कलर	
● हमारा स्वास्थ्य : तनाव-बचाव में ही उपचार	14
● राष्ट्रीय पक्षी दिवस	15
● राष्ट्र भाषा का महत्व	16
– ओमप्रकाश सारस्वत	
● स्काउट की कलम से : वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम की सुनहरी यादें	19
● गतिविधि दर्पण	20
● दक्षता पदक – मरुवासी	25
● गतिविधि पंचांग	26

लेखकों से निवेदन

स्काउट गाइड ज्योति का प्रकाशन मात्र प्रकाशन भर नहीं है बल्कि यह पत्रिका हमारे संगठन का दर्पण है, जो आयोजित हो चुकी गतिविधियों को प्रस्तुत करने, संगठन के कार्यों और इसके प्रशिक्षण तथा अन्य समाजोपयोगी क्रियाकलापों के विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठकों, सृजनात्मक एवं रचनाधर्मी प्रतिभाओं से स्वलिखित, मौलिक व पूर्व में अप्रकाशित स्काउटिंग गाइडिंग से संबंधित लेख, यात्रा वृत्तान्त, कैम्प क्राफ्ट संबंधी लेख, प्रशिक्षण विधि, पाठक प्रतिक्रिया आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। आपके अनुभव प्रत्येक स्काउट गाइड के लिए अमूल्य हैं। आप द्वारा प्रेषित सामग्री आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित की जावेगी। लेख स्पष्ट टंकित हो तथा उस पर यह अवश्य लिखा हो कि 'यह लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है'।

प्रकाशनार्थ सामग्री हमारी ईमेल आई.डी. scoutguidejyoti@gmail.com पर भिजवाई जा सकती है।

स्काउट गाइड ज्योति वार्षिक सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत शुल्क : 100/- संस्थागत शुल्क : 150/-

आजीवन सदस्यता शुल्क
1200/-

शुल्क राशि राज्य मुख्यालय जयपुर पर एम.ओ. अथवा 'राजस्थान स्टेट भारत स्काउट एण्ड गाइड, जयपुर' के नाम डिमान्ड ड्राफ्ट द्वारा जमा कराई जा सकती है।

नोट : स्काउट गाइड ज्योति में छपे/व्यक्त विचार प्रस्तोता के अपने हैं।
यह जरूरी नहीं है कि संगठन इनसे सहमत ही हो।

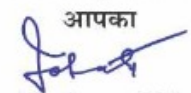


7 नवम्बर : स्काउट गाइड दिवस

आप सभी मेरे इस मंतव्य से निश्चित रूप से सहमत होंगे कि बालक-बालिकाओं के जीवन को सही दिशा एवं निर्देशन प्रदान करने में विश्व स्तर पर एक संगठन प्रयासरत एवं कार्यरत है; और वह है स्काउट गाइड संगठन। यह एक ऐसा संगठन है जो बाल्यावस्था से युवावस्था तक सही मार्ग प्रशस्त करने में अग्रणी है। बालक-बालिकाओं के जीवन को "चरित्र, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन एवं सेवा" जैसे चार मजबूत स्तम्भों का आधार प्रदान करता है यह संगठन, जिस पर इनके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होता है। प्रदायक की भाँति इस संगठन का हर संभव प्रयत्न रहता है कि इसकी छत्र-छाया में तैयार हो रहे बालक-बालिकाओं का सर्वांगीण विकास हो ताकि वे समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में सहायक सिद्ध हो सकें। जीवन के शुरुआती दौर में यहाँ मिलने वाला सही मार्गदर्शन ही जीवन को सही दिशा में ले जाने में सहायक सिद्ध होता है।

बाल्यावस्था से ही मार्गदर्शन प्रदान करने वाले इस संगठन में स्काउट गाइड दिवस 7 नवम्बर को एवं बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस 14 नवम्बर को मनाया जाना है। नवम्बर माह के दोनों दिवस बच्चों से सम्बद्ध और बच्चों को समर्पित है। इस महीने को भारत स्काउट व गाइड संगठन के एकीकरण के रूप में सदा याद रखा जाता है और इस दिवस का हमारे लिए विशेष महत्व है। इस दिन प्रत्येक स्काउट गाइड को समाज सेवा व भलाई का कार्य करते हुए जनता के निकट आने का प्रयास करना है, जिससे स्काउटिंग-गाइडिंग जन-जन के हृदय तक पहुंच सके। इस दिन पूरे राष्ट्र में फ्लेग स्टीकर की बिक्री अभियान का आगाज़ भी किया जाना है, जो स्काउट गाइड को स्वावलम्बन के प्रति जागृत करती है। यूँ कहा जा सकता है कि यह दिन स्वावलम्बन व सेवा को समर्पित करना है। स्काउट गाइड को अपने मित्रों, मौहल्ला व सार्वजनिक स्थानों पर आम नागरिकों, विद्यालय में शिक्षक व अन्य विद्यार्थियों को फ्लेग स्टीकर विक्रय करते हुए इस संगठन की महत्ता से अवगत कराते हुए फ्लेग डे मनाना है और यथा संभव सेवा कार्य कर जनचेतना जगानी है।

इसी माह उल्लास और उमंग का त्यौहार दीपावली भी हमें पूरे जोश के साथ मनानी है। बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक दीपों के पर्व दीपावली पर आप सभी को ढेरों शुभकामनाएं।

आपका

(जे.सी. महान्ति)
स्टेट चीफ कमिश्नर

शिविर आयोजन प्रारम्भ

हम सभी के लिए बेहद खुशी की बात है कि कोरोना का प्रभाव लगभग समाप्त हो रहा है और हम पुनः अपनी गतिविधियों एवं शिविरों के आयोजन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। गत माह में राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविरों के सफल आयोजन ने हम सभी में आत्मविश्वास का संचार किया है।

नवम्बर माह का प्रथम पखवाड़ा कोरोना गाइडलाइन की पालना के साथ नुक्कड़ सभाएं, प्रभात फेरियाँ, केम्प फायर, विशेष रैलियाँ और शिविर आयोजित कर उत्साहपूर्वक मनाना है। इसी दौरान चाचा नेहरू को याद करते हुए विद्यालयों में बाल दिवस को पूरे जोश के साथ मनाना है। नेहरू जी राष्ट्र निर्माण के लिए देश के बच्चों व युवाओं के उत्तम विकास पर महत्व देते थे। यह संगठन भी राष्ट्र निर्माण के लिए चाचा नेहरू के पद चिन्हों पर चल रहा है। साथियों, इन दिवसों पर अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन कर पूर्ण निष्ठा एवं लग्न से इस संगठन के आदर्शों को आत्मसात करें।

मैं सभी पाठकों एवं स्काउट गाइड संगठन की ओर से नव निर्वाचित सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई अर्पित करता हूँ।



संपादकीय

विशेष

नव-निर्वाचन

राज्य परिषद के सभी पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित

अध्यक्ष



श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
शिक्षा राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार

राज्य मुख्य आयुक्त



श्री निरंजन आर्य
मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार

उपाध्यक्ष (पुरुष)

श्री सुरेश सिंह रावत
श्री अक्षय त्रिपाठी
श्री घनश्याम ओझा
श्री आत्माराम टीबड़ा
डॉ. रूपराज भारद्वाज
श्री अभय सिंह शेखावत

उपाध्यक्ष (महिला)

डॉ. ओमकुमारी गहलोत
श्रीमती सुमन श्रृंगी
श्रीमती मिथलेश शर्मा
डॉ. विमला विश्वनाथ मेघवाल
श्रीमती शारदा जायसवाल

—

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य परिषद के 5 वर्षीय चुनावों में दिनांक 18 अक्टूबर, 2021 को नामांकन वापसी के पश्चात उपरोक्तानुसार सभी पदों पर उक्त प्रत्याशियों को निर्वाचन अधिकारी एवं राज्य सचिव ने निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया। राज्य परिषद का यह कार्यकाल नवम्बर, 2021 से नवम्बर, 2026 तक का रहेगा।

सभी पदाधिकारियों को राज्य संगठन की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं....

—रविनन्दन भनोत
निर्वाचन अधिकारी

वर्ल्ड स्काउट कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व

विश्व शान्ति और समृद्धि के लिए स्काउट आन्दोलन की भूमिका की तय

42वें विश्व स्काउट सम्मेलन की शिखर बैठक में 25 से 29 अगस्त, 2021 तक श्री जे.सी. महान्ति ने भारत स्काउट व गाइड के इन्टरनेशनल कमिशनर के रूप में भाग लिया।

इस सम्मेलन में 172 देशों ने भाग लिया। 5 दिवसीय सम्मेलन के दौरान संगठन के कार्य को विश्व शान्ति एवं समृद्धि के लिए अधिक प्रभावी बनाने के विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। भारत स्काउट व गाइड के इन्टरनेशनल कमिशनर श्री जे.सी. महान्ति सहित देश के 20 पदाधिकारियों व युवा प्रतिनिधियों ने भारत स्काउट व गाइड के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मुख्यालय पर उपस्थित होकर विश्व स्काउट सम्मेलन में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हुए विश्व स्काउट आन्दोलन के भविष्य को दिशा प्रदान करने हेतु अपने विचार वैश्विक पटल पर रखे और विश्व समुदाय द्वारा सुझाये गये विचारों और उपायों की पालना के लिए कार्य-योजना बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री महान्ति ने बताया कि "ब्रिजिंग द वर्ल्ड" थीम पर आयोजित सम्मेलन में कोविड-19 जैसी समस्या का एकता एवं



दृढ़ता के साथ सामना करने का संकल्प लिया गया। एसडीजी के अन्तर्गत विविध मुद्दों पर चर्चा की गई तथा गरीबी, सबके लिए स्वास्थ्य, शिक्षा का अधिकार, शुद्ध पेयजल,

पर्यावरण, जैव विविधता, महिला सशक्तिकरण, विश्व शान्ति आदि विषयक समस्याओं के समाधान हेतु संकल्प लिया गया। श्री महान्ति ने बताया कि इन संकल्पों की राजस्थान स्काउट गाइड द्वारा प्राप्ति हेतु कार्य योजना तैयार की जायेगी जिसमें युवाओं को ग्रामीण, जिला, संभाग एवं राज्य स्तर पर संगठित एवं सक्रिय करने के लिए सतत प्रयास किये जायेंगे। आजादी का अमृत महोत्सव की क्रियान्विति में इन विषयों को प्राथमिकताओं दी जायेगी।

42वां विश्व स्काउट सम्मेलन स्काउट आंदोलन के 100 साल के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा आयोजन है, जिसने दुनिया भर के 3,500 प्रतिभागियों को स्काउट आंदोलन के मानकों, नीतियों और साझा लक्ष्यों को आकार देने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए एक मंच प्रदान किया गया।



राज्य कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की राज्य कार्यकारिणी समिति की सभा का आयोजन सोमवार 13 सितम्बर, 2021 को राज्य मुख्यालय, जयपुर स्थित सभागार में स्टेट चीफ कमिश्नर श्री जे.सी. महान्ति की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें प्रदेश के लगभग 40 सदस्यों ने सहभागिता की। कार्यकारिणी सभा में स्टेट कमिश्नर (गाइड) श्रीमती रुक्मणी सिहाग, स्टेट कमिश्नर श्री अशोक पाटनी, श्री भूपेन्द्र सिंह, श्रीमती कविता जैन, श्री संदीप पाठक, श्री रघुवीर सिंह शेखावत, श्री सूरज गर्ग, सहायक स्टेट कमिश्नर श्रीमती मिथलेश शर्मा, श्री बी.एल. मीणा सहित अन्य सदस्यों ने भाग लिया।

स्टेट चीफ कमिश्नर श्री जे.सी. महान्ति ने अपने उद्बोधन में कहा कि गत वर्षों में सभी कार्यकर्ताओं व ऑर्गेनाइजर्स ने लगन से काम किया और प्रदेश की गतिविधि को एक उल्लेखनीय मुकाम दिलाने में अपना सहयोग प्रदान किया। प्रदेश में अधिक से अधिक स्काउटर गाइडर ने लीडर ट्रेनर व सहायक लीडर ट्रेनर की तकनीकी योग्यता प्राप्त कर



प्रदेश का नाम रोशन किया है। श्री महान्ति ने कोविड-19 एवं चुनावों में स्काउट गाइड द्वारा किये गये सेवा कार्यों के लिए सभी को धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

स्टेट कमिश्नर (गाइड) श्रीमती रुक्मणी सिहाग ने गाइड विभाग की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रदेश की गाइड्स ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। इस सेवाभावी संगठन के लिए मदद करने को वे सदैव तत्पर हैं।

राज्य सचिव श्री रविनन्दन भनोट ने सभा की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए गत सभा के कार्यवृत्त की अनुपालना रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री रघुवीर सिंह शेखावत ने सभी सभासदों का शाब्दिक स्वागत किया। राज्य संगठन आयुक्त श्री गोपाराम माली ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। श्री टीकम चन्द गुप्ता ने आय-व्यय ब्यौरा एवं आगामी वर्ष का बजट सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। अनेक सदस्यों ने अपनी बात रखते हुए विचारों एवं प्रस्तावों से अवगत कराते हुए स्काउटिंग गाइडिंग के विकास व विस्तार पर चर्चा की।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोटा का प्रतिनिधित्व

दुनिया की सबसे बड़ी स्काउट जंबूरी में भाग लेकर सीनियर रोवरमेट सौरभ सोनी ने विश्व स्तर पर कोटा जिले का प्रतिनिधित्व किया। वर्ल्ड स्काउट द्वारा दुनिया की सबसे बड़ी ऑनलाइन स्काउट जोटा जोटी जंबूरी का आयोजन 15 से 17 अक्टूबर 2021 तक किया गया, जिसमें राजकीय कला महाविद्यालय व राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड के सीनियर रोवरमेट सौरभ सोनी ने भाग लेकर एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में कोटा जिले का विश्व स्तर पर प्रतिनिधित्व किया। इसमें 171 से अधिक देशों के स्काउट प्रतिनिधि शामिल हुए। जोटा जोटी दुनिया की सबसे बड़ी स्काउट गतिविधि है जो ऑन द एयर होती है। यह एक शैक्षणिक कार्यक्रम है जो हर साल स्काउटिंग और दोस्ती के सप्ताहांत के लिए 20 लाख से अधिक स्काउट को एक साथ लाता है और युवा संचार प्रौद्योगिक के बारे में सिखाता है। यह कार्यक्रम दुनिया भर के स्काउट्स के लिए खुला है जो युवाओं को इंटरनेट और रेडियो का उपयोग करके एवं दूसरे से जुड़ने व संवाद करने में सक्षम बनाता है। यह इंटरनेट व एयरबेस पर होने वाला

दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल स्काउट कार्यक्रम है। जोटा जोटी का उद्देश्य संचार प्रौद्योगिकी वैश्विक नागरिकता के मूल्यों और एक बेहतर दुनिया बनाने में उनकी भूमिका के बारे में जानने के लिए सभी उम्र के युवाओं का समर्थन करना है। कार्यक्रम में गैर औपचारिक शिक्षा गतिविधियां, वेबिनार, कैंप फायर, कैंप साइट आदि आयोजित किए गए। जोटा जोटी विश्व स्काउटिंग का सबसे लंबे समय तक चलने वाला वैश्विक आयोजन में से एक है।

सर्कल ऑर्गेनाइजर प्रदीप चितौड़ा ने बताया कि सौरभ सोनी द्वारा जोटा जोटी जंबूरी में भाग लेकर कोटा जिले का नाम गौरवान्वित किया है। साथ ही सौरभ सोनी ने ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सभी गतिविधियों में भाग लेकर कोटा जिले से अग्रणी भूमिका निभाई है। कोटा जिले के सभी पदाधिकारियों ने उनकी इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं प्रस्तुत की इस अवसर पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त श्रीमान दिलीप कुमार माथुर ने सौरभ सोनी का अभिनंदन करते हुए बधाई प्रस्तुत कीं

दुनिया की सबसे बड़ी स्काउट जंबूरी में सौरभ सोनी ने किया कोटा का प्रतिनिधित्व



कोटा (टीकम चन्द गुप्ता)। दुनिया की सबसे बड़ी स्काउट जंबूरी में भाग लेकर कोटा जिले का प्रतिनिधित्व करने वाले सौरभ सोनी का एक छोटा सा चित्र। सोनी ने कोटा जिले का प्रतिनिधित्व करने के लिए जोटा जोटी जंबूरी में भाग लिया।

आओ भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना करें



विजय सिंह माली

प्रधानाचार्य

श्रीधनराज बदामिया राबाउमावि
सादड़ी, जिला पाली

मुक्ति को पाने के लिए साधन है समग्र विकास। वास्तव में शिक्षा का व्यावहारिक उद्देश्य समग्र विकास ही होगा। समग्र विकास यानी पंचकोशात्मक (अन्नमयकोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञान मय कोश, आनंदमय कोश) व्यक्तिव विकास जो कि सर्वांगीण व्यक्तिव विकास है।

शिक्षा ही मनुष्य को पशु से नर बनाती है और नर से नारायण बनने की संभावना निर्माण करती है। व्यक्तिव, समाज, देश और विश्व वैसे ही होते हैं जैसी उन्हें शिक्षा मिलती है। शिक्षा का स्वरूप और दिशा यदि ठीक है तो विश्व की सुस्थिति बनती है और बनी रहती है। यही यदि ठीक नहीं है तो सुस्थिति बिगड़ जाती है और अनवस्था और अनवस्था के बाद दुरावस्था की ओर विश्व अग्रसर होता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य इस बात की पुष्टि करता दिखाई देता है। विश्व में सुख, शान्ति, प्रसन्नता, समृद्धि, निरामयता, संस्कार आदि का हास हो रहा है। विश्व विकसित एवं विकासशील देशों में बंट गया है। हिंसा, अनाचार, शोषण, असुरक्षा बढ़ते जा रहे हैं। मनुष्य का गौरव लुप्त हो गया है। मनुष्य यंत्रों का और यांत्रिक संरचनाओं का गुलाम बन गया है। प्रकृति का शोषण हो रहा है संसाधन समाप्त हो रहे हैं, तापमान बढ़ रहा है, विकास के नाम पर विश्व विनाश की ओर बढ़ रहा है। आज समूचा विश्व संकट में है तो वह मनुष्य की वृत्ति और व्यवहार के कारण से है। मनुष्य की वृत्ति और व्यवहार का कारण शिक्षा है। मनुष्य की वृत्ति और व्यवहार बदलना है तो शिक्षा में बदलाव करना पड़ेगा। वर्तमान शिक्षा प्रणाली विश्व की संकटपूर्ण स्थिति का कारण है इसलिए उसकी पुनर्रचना की आवश्यकता है। शिक्षा का संबंध जीवन से है। शिक्षा का स्वरूप हम किस प्रकार का विकसित करते हैं उसका आधार जीवन को हम कैसे देखते हैं उस पर होता है। आज यदि विश्व संकट में है तो उसका कारण हमारी जीवन दृष्टि में ही खोजना पड़ेगा। इस दिशा में विचार करने पर लगता है कि हम भारतीय जीवन दृष्टि को शिक्षा का आधार बनाते हैं तो गुल्मी सुलझने लगेगी और हम पुनः सुस्थिति को प्राप्त होंगे।

शिक्षा की पुनर्रचना के लिए हमें भारतीय जीवन दृष्टि को शिक्षा का आधार बनाना पड़ेगा। चित्ति राष्ट्र जीवन की आत्मा है, भारतीय जीवन दृष्टि का सार है इसके आलोक में हमें शिक्षा की पुनर्रचना का

विचार करना होगा ताकि संकट निवारण का मार्ग मिल सके। हमें शिक्षा का एक ऐसा प्रतिमान तैयार करना पड़ेगा जो समग्रता में भारतीय हो अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य, विषय वस्तु, अध्ययन पद्धति, अध्येता और अध्यापक, शिक्षा का तंत्र, शिक्षा के सहयोगी आदि सभी आयामों में भारतीय परिभाषाएं यदि हैं तो खोजनी पड़ेगी, समझनी पड़ेगी और अपनानी पड़ेगी और यदि नहीं है तो निर्माण करनी पड़ेगी। वर्तमान परिदृश्य में उसे प्रयोजनीय बनाने के लिए उसका युगानुकूल स्वरूप निर्माण करना होगा। शिक्षा के विश्वस्त आयाम कौनसे हैं इसका विवेक करना होगा। परिवर्तनशील आयामों के संदर्भ में विचार विमर्श के बाद परिवर्तन कर उन्हें परिष्कृत करना होगा। जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के साथ शिक्षा को जोड़ना चाहिए।

भारतीय जीवन दृष्टि पर आधारित

शिक्षा का उद्देश्य है मुक्ति। सा विद्या या विमुक्तये। मनुष्य के जीवन का भी चरम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है अतः शिक्षा वही है जो मुक्ति दिलाती है।

मुक्ति को पाने के लिए साधन है समग्र विकास। वास्तव में शिक्षा का व्यावहारिक उद्देश्य समग्र विकास ही होगा। समग्र विकास यानी पंचकोशात्मक (अन्नमयकोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञान मय कोश, आनंदमय कोश) व्यक्तिव विकास जो कि सर्वांगीण व्यक्तिव विकास है। विकास के इस प्रतिमान को लेकर शिक्षा का संपूर्ण मंत्र एवं तंत्र विकसित करना पड़ेगा। भारतीय जीवन दृष्टि के अनुसार शिक्षा एक पवित्र कार्य है, वह जीवमान रचना है उसमें यांत्रिक रचना के नियम लागू नहीं हो सकते, वह अध्येता सापेक्ष रहती है, वह अध्यापक के विवेक पर आधारित होती है, उसका अधिष्ठान आत्मिक है। आनंद, प्रेम, अभय, स्वतंत्रता, सहजता इसके आधारभूत तत्व हैं। इसे क्रय विक्रय का पदार्थ नहीं बनाया जा सकता। शिक्षा की जीवमान रचना के रूप में प्रतिष्ठा करना आवश्यक है। भारतीय परंपरा में शिक्षा समाज के द्वारा पोषित रही है, शिक्षा समाज और संस्कृति के रक्षण और

संवर्धन के लिए होती है। अतः समाज की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की रचना और व्यवस्था होती रही है। शिक्षा के पोषण का दायित्व समाज का है, शासन या राज्य उसकी सहायता करता है। साथ ही शिक्षा शिक्षक आधारित रही है। शिक्षा समाज की आवश्यकता है इसलिए उसे पूरी करने के लिए उस माध्यम से समाज की सेवा करने के लिए अध्यापक शिक्षा देना स्वीकार करता है। जो भी जिज्ञासु है, तत्पर है, उसे वह छात्र के रूप में स्वीकार करता है। उसे क्या सिखाना कितना सिखाना कैसे सिखाना आदि सब वही निश्चित करता है। शिक्षा के तंत्र का नियंत्रक शासन नहीं रहा है। शिक्षक ही उसका अधिष्ठाता होता है। शिक्षा छात्र केंद्रित रही है। जिज्ञासा से प्रेरित होकर विनयशील बनकर छात्र अध्ययन के लिए अध्यापक के समक्ष उपस्थित होता है तब उसकी पात्रता के अनुरूप अध्यापक उसे शिक्षा प्रदान करता है। पात्रता निर्देशित करने का कार्य अध्यापक अपने विवेक से करता है। किसी निश्चित, जड़ कानून या नियम को लागू करके नहीं। शिक्षा ज्ञानार्जन का साधन रही है अर्थार्जन का नहीं। शिक्षा साधना सापेक्ष सही है साधन सापेक्ष नहीं।

वर्तमान शिक्षा इसके ठीक विपरीत है उसका पारमार्थिक लक्ष्य भोग है, कामना तृप्ति है और उसका व्यवहारिक लक्ष्य अर्थार्जन की क्षमता विकसित करना है शिक्षा सर्वांगीण विकास की भाषा बोलती है परंतु उस विकास का विनियोग केवल अर्थ और काम सापेक्ष ही होता है। वर्तमान शिक्षा जड़ पदार्थ है, वह क्रय विक्रय की वस्तु है, उसके साथ पवित्रता का भाव जुड़ा हुआ नहीं है। अतः व्यक्तित्व की संकल्पना, विकास की संकल्पना, अध्यापक अध्येता के संबंध की संकल्पना, शिक्षा के लक्ष्य के संकल्पना यांत्रिक बन जाती है। मुक्ति की संकल्पना यहां सर्वथा अप्रासंगिक है अतः उसका सारा तंत्र भौतिक और यांत्रिक है। शिक्षक, छात्र या समाज के विवेक का यहां कोई स्थान नहीं है। इस व्यवस्था में मनुष्य भी एक ससाधन मात्र है। वर्तमान शिक्षा का नियंत्रक शासन है, शिक्षक नहीं। अर्थ और प्रबंधक शिक्षक के ऊपर हावी है। शिक्षक का विवेक अपेक्षित नहीं है। वह एक कर्मचारी है उसका सारा कार्य अर्थ सापेक्ष है। शिक्षा में बाजार के नियम लागू है। यहां छात्र ग्राहक है, संचालक पूंजी निवेश करने वाला व्यापारी है, शिक्षक बिक्री कर्मचारी है और अध्ययन अध्यापन एक करार है। दोनों पक्षों को करार का पालन करवाने के लिए कानून है, न्यायालय है और दंड विधान है। आजकल पाठ्यक्रम परीक्षा का प्रमाण पत्र की पद्धति से शिक्षा का यंत्रीकरण हो गया है। आज प्रमाण पत्र किसी के शिक्षित होने का परिचायक नहीं है वह विशिष्ट प्रकार की नौकरी के लिए तय की गई जानकारीयों के परिचित होने मात्र का प्रमाण पत्र है। स्पष्ट है कि वर्तमान में भारत की शिक्षा भारतीय न होकर भारतीयोत्तर जीवन दृष्टि पर आधारित बन गई है। परिणाम स्वरूप भारतीय मानस एक आंतरिक संघर्ष से ग्रस्त बन गया है। वह अपेक्षा करता है भारतीयता की और तंत्र है अभारतीय। अतः भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना आवश्यक हो गई है।

भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना करने के लिए हमें गहराई

में मूल तक जाना होगा। शाश्वत चिंतन को, सनातन, सनातन तत्वों को युगानुकूल व्यवहारिक रूप देना होगा। सर्वजन समाज में इसे स्वीकृत बनाने के लिए लोकमत परिष्कार का व्यापक कार्यक्रम बनाना होगा। चिंतन के अनुरूप प्रयोग क्षेत्र निर्माण करने होंगे, प्रयोग करते करते चिंतन को परिष्कृत करना होगा और राज्य तंत्र को भी इसके अनुकूल बनाना होगा। शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन बनाने के लिए हमें गुरुकुल रचना को पुनर्जीवित और पुनर्प्रतिष्ठित करना होगा। गुरुकुलवालों के लिए शासन मान्यता की आवश्यकता को समाप्त करना होगा। सभी विद्यालय महाविद्यालयों को स्वायत्त बनाना होगा। वर्तमान में हमारे सामने दुविधा यह है कि भारतीय मानस आत्म निष्ठ शिक्षा की कामना करता है अपेक्षा करता है परंतु जड़वादी रचना में व्यवहार करता है। शिक्षक गुरु बने ऐसी अपेक्षा करता है परंतु उसे नौकर बनाने वाली रचना करता है। पारंपरिक रूप से हमारे संस्कार शिक्षा को पवित्र मानने के हैं परंतु व्यवहार भोगवादी का है। शिक्षक के दायित्व की चर्चा होती है परंतु शासन का नियंत्रण दूर करने का विचार नहीं होता। 'सा विद्या या विमुक्तये' अभी भी हमारा प्रिय वाक्य है परंतु व्यवहार में शिक्षा बंधन में है। साधना शब्द के प्रति हमें अत्यंत आदर है परंतु शिक्षा, शिक्षक, शिक्षा केन्द्र का मूल्यांकन साधनों के आधार पर होता है अर्थात् हम पारंपरिक संस्कार और वर्तमान में उसके विपरीत स्थिति, भारतीय अपेक्षाएं और अभारतीय व्यवहार के द्वंद्व में फंसे हुए हैं।

प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना की दिशा में प्रयास प्रारंभ हो गए हैं। पुनरुत्थान विद्यापीठ अहमदाबाद, केशव विद्यापीठ इंदौर, कर्नाटक के प्रबोधिनी गुरुकुल, मैत्रेयी गुरुकुल, वेदविज्ञान गुरुकुल, हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला अहमदाबाद के प्रयोग उल्लेखनीय हैं। सन 2008 में साबरमती में श्री हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला नाम से निवासी गुरुकुलम का प्रारंभ हुआ। इस निवासी व्यवस्था में 10 वर्ष की आयु से लेकर छात्र निवास करते हैं। यहां भारतीय पोशाक को अपनाया गया। रविवार के स्थान पर अष्टमी और चतुर्दशी को अनध्ययन का दिन बनाया गया। कालांश पद्धति और घंटी को हटाने का प्रयास किया गया। निरर्थक विषय और निरर्थक विषय वस्तु को हटाकर आयुर्वेद ज्योतिष जैसे नित्य उपयोगी विषय और विषय वस्तु को प्राथमिकता दी गई। निवासी छात्रों के आहार व्यवस्था विशिष्ट सूत्रों के अनुसार की गई। छात्रों को जिम्मेदारी दी गई यहां मातृभाषा के बाद संस्कृत प्रमुख भाषा के रूप में पढ़ाई गई। परीक्षा की पद्धति को भी बदला गया। पढ़ने के लिए बैठने की व्यवस्था लिखने की पद्धति भोजन खेलकूद आदि सभी में भारतीयता को अपनाया गया इसके सकारात्मक परिणाम सामने नजर आए। चित्ति के आलोक में शिक्षा की पुनर्रचना करने में हम सफल रहे तो आने वाले समय के अंदर भारत की शिक्षा जो भारत की धुरी से हट गई है उसे फिर से भारत की धुरी पर स्थापित करने में हम समर्थ होंगे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसकी शुरुआत है।

स्काउटिंग में गीतादर्शन

◆ देवेन्द्र पण्ड्या
प्रधानाचार्य (से.नि.)
सिविल लाइन्स गढ़ी
जिला - बाँसवाड़ा

स्काउटिंग में गीता के उपदेशों से व्यक्तित्व निर्माण की भावना भी व्यवहृत होते दिखाई दी। अतः यहाँ पर गीता में वर्णित उन श्लोकों का उल्लेख करना तथा उनकी व्याख्या करना प्रासंगिक समझता हूँ जिनकी प्रेरणा से स्काउटिंग प्रवृत्ति की विद्यालयी जीवन व आगे जाकर सामाजिक जीवन में आवश्यकता व प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

समाज के नवनिर्माण में योग्यता व प्रतिभा के साथ साथ चरित्र की दृढ़ता एवं महानता की भी समान अनुपात में आवश्यकता एक लम्बे समय से अनुभव होती रही है। इसे व्यवहृत करने के लिये नवनिर्माण हेतु किए जाने वाले हमारे अभिनव प्रयासों में शिक्षा के साथ विद्या के समन्वय की आवश्यकता है। शिक्षा व्यक्ति के बहिरंग जीवन को सुविकसित करती है और विद्या अंतरंग को। शिक्षा से लौकिक योग्यता व प्रतिभा बढ़ती है और विद्या से मानव सुसंस्कारी, उदार एवं उदात्त बनता है, उसका व्यक्तित्व, श्रेष्ठता एवं शालीनता से सुसम्पन्न हो जाता है। अतः एक को सभ्यता के विकास का साधन तथा दूसरे (विद्या) को सांस्कृतिक उन्नति का माध्यम समझा जा सकता है। संक्षेप में विद्या साध्य है तो शिक्षा उस साध्य को पाने का साधन। आवश्यकता है प्रगतिशील जीवन के लिए दोनों के समन्वय एवं सुविकसित करने की। ध्यातव्य है कि इसी बात को व्यक्तित्व विकास के लिए आधारभूत अवयव मानते हुए 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा वर्तमान में निर्मित नई शिक्षा नीति में भी समग्रशिक्षा की आवश्यकता व महत्ता को रेखांकित किया गया है। इस अवधारणा में मात्र पाठ्यक्रम ही सबकुछ नहीं है। वातावरण एवं उपक्रम का महत्व उससे कहीं अधिक है। इसलिए 1986 की रा.शि. नी. में हमारी शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के साथ विद्या के समन्वय की राह प्रशस्त करने हेतु पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों को समुचित स्थान दिया गया। इन पाठ्येतर प्रवृत्तियों में स्काउटिंग – गाइडिंग प्रवृत्ति भी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। विश्व में 217 देशों में 25 मिलियन (2.5 करोड़) से भी अधिक सदस्यों वाला यह वैश्विक संगठन आज विश्वभर में अपने बहुआयामी क्रियाकलापों के लिए लोकप्रिय कार्यक्रम बन चुका है।

निःसन्देह बालचर बनाकर हम बालक में वे सारे गुण व क्षमताएँ विकसित करना चाहते हैं जो उसे विद्यावान बनाने में तथा उसके व्यक्तित्व

के विकास में सहायक बन सके। साथ ही आगे जाकर वह एक स्वानुशासित, स्वावलम्बी, श्रमशील, सेवाभावी, तत्पर सहयोगी, दयावान, परोपकारी, ईमानदार एवं शिष्ट आचरणवाला विवेकशील नागरिक बने। मनोवैज्ञानिकों का अभिमत है कि ज्ञान प्राप्ति, संस्कारवान होना, अपनी स्वाभाविक क्षमताओं का विकास आदि गुण बड़ी आयु की अपेक्षा छोटी आयु के बालक बालिकाओं में ही अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न किए जा सकते हैं। इतना ही नहीं बालक अपनी सहजवृत्तियों के कारण सदैव अनुकरणप्रिय होता है। यहाँ पर मुझे अपने शिक्षकीय जीवनकाल में एक स्काउट तथा एक स्काउटर के रूप में प्राप्त अनुभवों का उल्लेख करना प्रासंगिक लगता है। कक्षा आठ तक की कालावधि में “स्काउट” रहने के आनन्दमयी अनुभवों से मुझे “स्काउटर” बनने की प्रेरणा मिली। स्काउटर के रूप में कार्य करते हुए मन में ऐसी भावना बनी कि स्काउटिंग—गाइडिंग प्रवृत्ति को एक अच्छी व आदर्श विद्यालयी पाठ्येतर प्रवृत्ति का रूप देने हेतु कोई योजना बनाई जाय। जब मैं इस प्रवृत्ति के माध्यम से बालकों में संस्कार उन्नयन की योजना के लिए सोच रहा था कि उन्हीं दिनों मुझे पूज्य बापू महात्मा गाँधी द्वारा लिखित पुस्तक “गीता माता” को पढ़ने का अवसर मिला। गाँधीजी की इस पुस्तक ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि मानो मुझे मेरे सारे प्रश्नों का उत्तर मिल गया हो। मैं गीता को बार बार पढ़ने को अनुप्रेरित हुआ। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि स्काउटिंग के उद्देश्यनिष्ठ सभी क्रियाकलाप पूर्णरूप से श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित जीवनोपयोगी, मानव में दायित्व की भावना का अंकूरण करने, उदात्तता, कर्तव्यकर्म करने की प्रेरणा देने आदि की शिक्षा से रंगे हुए हैं। ऐसा आभास होने लगा कि स्काउटिंग और गीता का रागात्मक सम्बन्ध हो। इस प्रकार एक ओर गीता में निर्दिष्ट सन्देश तथा उपदेशों की सर्वव्यापकता, उच्चता तथा महत्ता सिद्ध होती है तो दूसरी ओर स्काउटिंग में गीता के उपदेशों से

व्यक्तित्व निर्माण की भावना भी व्यवहृत होते दिखाई दी। अतः यहाँ पर गीता में वर्णित उन श्लोकों का उल्लेख करना तथा उनकी व्याख्या करना प्रासंगिक समझता हूँ जिनकी प्रेरणा से स्काउटिंग प्रवृत्ति की विद्यालयी जीवन व आगे जाकर सामाजिक जीवन में आवश्यकता व प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

प्रथम :- स्काउटिंग का एक महत्वपूर्ण आदर्श वाक्य है “सदैव मुस्कराते रहो” इसी बात को भगवद्गीता में अध्याय 2.65 में इस प्रकार कहा गया है।

प्रसादे सर्वदुःखानां ह्यनिरस्योपजायते।

प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥

अर्थात् चित्त प्रसन्न रहने से व्यक्ति के सभी दुःखों का नाश हो जाता है। साथ ही जिसका चित्त प्रसन्न रहता है, उसकी बुद्धि भी स्थिर हो जाती है। इस प्रकार स्थिर बुद्धिवाला व्यक्ति कभी कर्मों का सन्यास नहीं करता, परन्तु लोककल्याण के निमित्त समस्त कर्तव्यकर्मों का निष्काम बुद्धि से पूर्ण करता है। इसी से ही व्यक्ति को शान्ति प्राप्त होती है तथा सुख का अनुभव करता है। कर्म करते रहने की यह प्रेरणा भी प्रसन्न रहने से ही प्राप्त होती है।

द्वितीय :- उपर्युक्त कर्मविषयक बात को गीता में (अ. 3.8 एवं 2.48) में निम्न प्रकार बताया है।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥

अर्थात् स्वधर्मानुसार एवं अन्य सभी कर्तव्यकर्मों को बिना किसी स्वार्थ भावना के करते रहने पर स्वयं के शरीर का निर्वहन तो होगा ही लेकिन इसके साथ साथ फलाशा का त्यागकर किए जाने वाले कर्मों से लोककल्याण भी होता रहेगा तथा इस प्रकार ईश्वर द्वारा निर्मित सृष्टिचक्र भी अबाधगति से चलता रहेगा। यही बात स्काउटिंग-गाइडिंग के विभिन्न स्तरों में प्रथम स्तर अर्थात् कब व बुलबुल के आदर्श वाक्य “भरसक प्रयत्न करो” में परिलक्षित होती है। यह प्रवृत्ति प्रधान जीवन की ओर संकेत भी है।

तृतीय :- इसी क्रम में आगे जाकर स्काउटिंग-गाइडिंग प्रवृत्ति में रोवर-रेंजर वर्ग के लिए जो कि इस प्रवृत्ति के प्रशिक्षण का तीसरा स्तर है में “सेवा करो” के आदर्शवाक्य पर जोर दिया गया है।

निश्चय ही यह जीवन हमें ईश्वर ने अन्य सभी जीवों के महत्व को समान रूप से स्वीकार करते हुए उनके साथ सहायता का हाथ आगे करते हुए उनकी सेवा के लिए दिया है। सेवा शब्द को यहाँ व्यापक अर्थ में लेने की आवश्यकता है। न केवल परिजनो के लिए अपितु समग्र प्राणियों के लिए सेवा करने को तत्पर रहना ही सेवा का सही अर्थ है। इस बात को भगवद्गीता में निम्न प्रकार बताया है।

मां च यौव्यभिवारेण भक्तियोगेन सेवते ।

स गुणात्समतीत्यैतां ब्रह्मभूयाय कल्पते॥ (अ.14.26)

यहाँ पर श्लोक का तात्पर्य बड़ा ही गुढ़ है। इस भौतिक जगत में सारे कार्य प्रकृति (ईश्वरीय शक्ति) के गुणों के प्रभाव से संचालित होते हैं अतः व्यक्ति को उन गुणों के प्रभाव से विचलित न होते हुए केवल ईश्वर के निमित्त ही कार्य करने चाहिए। यहाँ पर अभिप्राय केवल ईश्वर ही नहीं अपितु उसके विभिन्न पूर्णांश भी सम्मिलित हैं। इन पूर्णांशों के असंख्य अंश हैं। अतः किसी भी अंश की सेवा ईश्वरीय सेवा ही है। सृष्टि के अनेक प्रकार के अनेक विनाशवान् पदार्थों में एक ही अविनाशी परमेश्वर समा रहा है। अतः स्वार्थ को सेवा में बदलने की तथा सभी व्यक्तियों में समानभाव रखते हुए हर अवसर पर चाहे राष्ट्रीय आपदा का मौका हो, चाहे धार्मिक स्थलों पर सहायता कार्य करना हो अथवा किसी भी प्रकार के सामाजिक व राष्ट्रीय उत्सव हों, सभी में समभाव से एक स्काउट को तैयार रहने की प्रेरणा इन पंक्तियों में परिलक्षित हो रही है।

चतुर्थ :- किसी भी देश की संप्रभुता, सुरक्षा, प्रगति, उन्नति, उसका सांस्कृतिक एवं साहित्यिक वैभव, देशभक्ति तथा उसकी सम्यक्ता तभी तक अक्षुण्ण रहती है जब तक उस देश के नागरिकों की रग रग में सामाजिक, राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के गुणों का संचरण बना रहता है।

इन सभी गुणों के अंकूरण की सही अवस्था विद्यार्थी जीवन ही है व इसी में उसकी सफलता निहित होती है। स्काउट-गाइड आन्दोलन में ऐसे अनेक क्रियाकलाप हैं जो मूल्य आधारित जीवन की कल्पना को साकार करते हैं।

इन क्रियाकलापों से जिन गुणों का विकास होता है वे बालकों को न केवल मातृभूमि के साथ जोड़ते हैं, तथा परस्पर संगठित करते हैं अपितु उसकी आन बान व शान को बनाए रखने हेतु उत्सर्ग की भावना भी भरते हैं। इन क्रियाकलापों में सर्वधर्म प्रार्थना, समाज सेवा शिविरों का आयोजन, राष्ट्रीय भावात्मक एकता शिविर, रैलियाँ, जम्बूरियाँ, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रमण, सामुदायिक सहभोज में भाग लेना, भ्रमण के माध्यम से देश की भौगोलिक जानकारी देना, राष्ट्रभक्तों के जीवन का अनुकरण करने की प्रेरणा, राष्ट्रचिन्ह, गीत, गान आदि के प्रति आदरभाव की जानकारी आदि प्रमुख कहे जा सकते हैं। इन क्रियाकलापों के माध्यम से जिन जिन गुणों का विकास बालक में भरने का उद्देश्य है वे सारे विशिष्ट गुणों का दर्शन भगवद्गीता में हमें इस प्रकार होता है।

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।

अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्॥ (18.20)

पंचम :- यह एक अनुभूत सत्य है कि मनुष्य भावों से भीगा हुआ होता है। यही भावमयी गुण उसे संवेदनशील

बनाता है। परन्तु आज विश्वभर में संवेदनशीलता का स्थान असंवेदनशीलता ने ले लिया है।

स्काउटिंग-गाइडिंग में प्रकृति की उन्मुक्त गोद में लगाये जाने वाले शिविरों से बालक ईश्वर की अद्भूत व विशाल चमत्कारी शक्ति से न केवल रूबरू होता है अपितु उसमें अपने साथियों एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण के भाव बनते हैं। यही भाव सभी को आपस में बान्धे रखता है। कहने को ईश्वर धातुओं पत्थरों एवं काष्ठ से बनी मूर्तियों में बसता है, परन्तु ऐसा नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि ईश्वर के प्रति भक्तिभाव, विश्वास एवं श्रद्धा ही उस मूर्ति में ईश्वर के होने का आभास कराती है, तथा व्यक्ति संवेदनशील बनता है। यही बात गीता में निम्नप्रकार परिलक्षित होती है। (श्लोक संख्या 2.66, 17.26 एवं 13.28 गीता)

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते॥ (17.26)

संक्षेप में सद्भाव तथा साधुभाव दोनों ही आध्यात्मिक स्थिति के सूचक हैं। हर समय कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति संवेदनशील बना रहता है। भावना से जुड़ी यही बात (चाणक्य नीति 8.12) में निम्न प्रकार कही गयी है।

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये।

भावे ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥

पष्ठम् :- हमारा भारत गाँवों का देश है। दूरस्थ ग्राम्यांचल में आवासित कई लोग आज भी अभावों में अपना जीवन बसर करते हैं। फिर भी वे चलते ही रहते हैं। इसका मुख्य कारण कारण उन्होंने सीमित साधनों से अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जाय अपने आप सीख लिया है।

आराम व विलासी जीवन के साधनों के प्रति त्याग की भावना को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है और वैसे ही हर समय हर व्यक्ति को सभी साधन सुविधाएँ मिल ही जाँय ऐसा संभव होना सरल नहीं है। जीवन में कई बार ऐसे भी अवसर आते हैं जब व्यक्ति को संयम से स्वानुशासन से आत्मनियंत्रण रखते हुए कार्य करते रहना पड़ता है। कभी कभी अपने साथियों एवं अन्य लोगों के लिए अपने हित को रोक देना होता है। यही बात स्काउटिंग-गाइडिंग के शिविर जीवन, वनभ्रमण के कार्यक्रम, सायंकालीन केम्पफायर, जम्बूरियाँ आदि में सहज रूप में ही बालक को अनुभव हो जाती हैं। इतना ही नहीं स्काउटिंग के सभी कार्यक्रम समयनिष्ठ होते हैं, उनमें नियमितता व मितव्ययता होती है। आलस्य को इसमें कहीं स्थान नहीं दिया गया है। साथ ही स्काउट का जीवन स्वावलम्बन की पगड़ण्डी पर आगे बढ़ता है। इसकी अपनी एक संस्कृति है जो भारतीय संस्कृति से मेल खाती है। ईश्वर में आस्था, शरीर का स्वस्थ बनाए रखना, परिजनों एवं अन्य सभी आयुवर्ग के साथियों आदि के साथ एकजुट होकर रहना तथा

उनके लिए अपने मन में भाव बनाए रखना आदि गुण तो स्काउटिंग के प्राण हैं। इन सारी विशेषताओं को जीवन में उतारने की शिक्षा हमें हमारी भगवद्गीता के अध्ययन से बड़ी सरलता से अनुभव किया जा सकता है। यहाँ वहाँ गीता में कई जगह पर इनका उल्लेख मिल जाता है। कुछ को हम उदाहरण स्वरूप निम्न प्रकार देख सकते हैं।

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।

कर्मण्यभिप्रवृत्तौपि नैवं किञ्चित्करोति सः॥

सार रूप में त्याग की महत्ता का सबक तो गीता से बढ़ कर कहीं मिल ही नहीं सकता। स्काउट के जीवन में जिन मुख्य बातों के त्याग गीता से साम्यता दिखती है उनमें स्वार्थ का त्याग, अहम भाव का त्याग, कर्तव्यकर्माँ को पूरा करने में आलस्य का त्याग तथा निषिद्ध कर्माँ का त्याग प्रमुख हैं।

अस्तु उपर्युक्त वर्णित गीता विषयक संदेश ही स्काउटिंग-गाइडिंग प्रवृत्ति की आवश्यकता को पुष्ट करता है ऐसा नहीं है, बल्कि भगवद्गीता तो जीवन रूपी गाड़ी को गति प्रदान करने, उसे स्वचालित करने तथा आगे बढ़ने हेतु अनेक महत्वपूर्ण जीवनमूल्य आधारित स्वस्थ क्रियाएँ करने को अनुप्रेरित करती है तथा व्यक्ति को सम्बल भी प्रदान करती है। हमें यह सोचना होगा की यदि व्यक्तित्व निर्माण के जिन आवश्यक संस्कारों का जिनमें त्याग, सेवा, प्रेम, दया, दूसरों की सहायता हेतु तत्पर रहना, समूह का नेतृत्व करना एवं अन्यत्व के भाव मुख्य हैं आदि का विद्यार्थी जीवन में बीजारोपण ही नहीं हुआ हो तो शिक्षित होकर भी विद्यालय से निकने वाले युवकों के मन में देश, समाज और राष्ट्रीय संस्कृति के उत्थान की विचारणा आएगी कहाँ से। स्पष्ट है कि युवक शिक्षित तो हो जाते हैं परन्तु विद्याविहीन रह जाते हैं। ऐसे विद्याविहीन, शिक्षित युवाओं के मन में निस्वार्थ तथा नीति-अनीति में भेद करने के अन्तरंगी गुणों का विकास कैसे हो सकता है।

अतः आवश्यकता है अंतरंग को सुविकसित करते हुए युवा वर्ग के व्यक्तित्व को सुविकसित करने की न कि उपाधि धारण किए हुए शिक्षित वर्ग की। चरित्र बल के अभाव में एकांगी योग्यता बढ़ाने वाली शिक्षा अन्ततोगत्वा समाज व राष्ट्र के सर्वांगीण उन्नयन में सहायक होने के बजाय अवरोधक ही बन जाती है। आन्तरिक गुणों के विकास द्वारा व्यक्तित्व का विकास एवं परिष्कार करते हुए भावी पीढ़ी के नवनिर्माण का विचार शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हो सकेगा। संक्षेप में यह कहना समुपयुक्त होगा कि विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में आदर्श नागरिक के गुणों को विकसित करने में सहायक पाठ्येत्तर प्रवृत्ति के रूप में चल रही स्काउटिंग-गाइडिंग प्रवृत्ति के गीतों में भगवद्गीता के संगीत की स्वरलहरी अनुभव हो रही है।

शिक्षा में स्काउटिंग का महत्व

♦ डॉ. मोहम्मद कलर
जैसलमेर

शिक्षा के क्षेत्र में

अपनी एक सहगामी प्रवृत्ति है स्काउटिंग। जिससे जुड़कर हर एक आयु वर्ग के बालक बालिका लाभान्वित होते हैं। 5-10 वर्ष तक की आयु वर्ग के बालक बालिका कब और बुलबुल कहलाते हैं। 10 से 18 साल तक के बालक स्काउट तथा बालिका गाइड की संज्ञा प्राप्त करती है। इसी प्रकार 16 से 25 वर्ष तक के युवा बालक रोवर एवं बालिका रेन्जर कहलाती है। विभिन्न आयु वर्ग की रुचियों एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम एवं गतिविधियां निर्धारित की गई है।

स्काउट गाइड प्रवृत्ति बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सहायक है। इनके पाठ्यक्रम में दक्षता बैजों के समावेश द्वारा विभिन्न सदगुणों का संधारण किया जाता है। दक्षता बैजों का वर्गीकरण स्वास्थ्य, कौशल, स्वावलम्बन और चरित्र आधारित है। जिनसे प्रभावित होते हुए बालक बालिका सम्पूर्ण विकास को प्राप्त कर एक सुयोग्य नागरिक बनता है।

1907 में राबर्ट स्टीफेन्सन स्मिथ बेडेन पावेल ने ब्राउन सी द्वीप पर 20 बालकों के साथ स्काउटिंग प्रारम्भ की। जो वर्तमान में विश्व के लगभग 217 देशों में संचालित होकर विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। जो बिना जाति, धर्म, वर्ग, सीमाओं के सभी के लिए खुला अराजनैतिक संगठन है। सेवा की भावना का उद्द्योदय बाल मस्तिष्क में कर मानवीय संवेदनाओं का धारा प्रवाह समाज में बना रहे इस हेतु बालक बालिकाओं के लिए शिविरों एवं विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

भारत स्काउट व गाइड की राज्य शाखा राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य



मुख्यालय जयपुर राजस्थान शिक्षा विभाग की मुख्य सहशैक्षणिक गतिविधि है जिससे राजस्थान के शिक्षण संस्थान जुड़कर अपने बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। शिविरों द्वारा विभिन्न गुणों का निर्माण एवं स्थायित्व बालक में पैदा होता है जो पुस्तकीय ज्ञान न होकर धरातलीय है। भारत भ्रमण, बाहरी एवं धरातलीय क्रीड़ाओं, वन भ्रमण द्वारा प्रकृति का सामिप्य, मेलों आदि द्वारा सेवा कार्य, समाज सेवा शिविरों द्वारा समाज से जुड़ाव, सरकारी जनकल्याणकारी योजनाओं में योगदान द्वारा बालक बालिकाएं स्वयं को वर्तमान समय के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण समझने लगता है और अपने कर्तव्य बोध के साथ राष्ट्र निर्माण में संलग्न होता है।

2009 की राष्ट्रीय जम्बूरी अहमदाबाद में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि बालक जब स्काउटिंग में प्रवेश करता है तो अपनी गणवेश स्वयं के रूपयों से खरीद कर प्रवेश करता है। और वो देने की भावना से संगठन में प्रवेश करता है और जो देने की भावना से प्रवेश करता है वो लेना नहीं चाहता।

स्काउट गाइड अपनी योग्यता वृद्धि के तहत राज्य पुरस्कार के रूप में राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित होता है तत्पश्चात राष्ट्रपति पुरस्कार की ओर अग्रसर होता है। राष्ट्रपति अवार्ड में भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा समारोह में सम्मानित किया जाता है। जिनका क ई ज ग ह सैद्धान्तिक फायदा स्काउट गाइड को होता है।

बा न स अंकों को दरकिनार रखते हुए आओं हम बालकों के बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास में सहायक हो कर उनके साथ स्काउट गाइड प्रवृत्तियों से जुड़े।

तनाव बचाव में ही उपचार

तनाव और परेशानी आज हमारे जीवन का एक आम हिस्सा बन कर रह गया है। कभी-कभी इन तनाव भरी स्थितियों का और अपनी ज़िम्मेदारियों का प्रबंधन करना बहुत मुश्किल हो जाता है। हर रोज़ के काम और तनाव की स्थिति के बाद अगर हम कुछ समय अपने आप को दें तो शायद हमें तनाव से बचने के कुछ रास्ते मिल जायें। अगर आप रोजमर्रा के तनाव और परेशानियों से परेशान हो जाते हैं तो इसका अर्थ है कि आपको तनाव कम करने की ज़रूरत है।

- ✓ तनाव अक्सर कई बीमारियों की जड़ होता है।
- ✓ अनावश्यक चिंता करना इसका मुख्य कारण है।
- ✓ दूसरों से मुकाबला करने की आदत को छोड़ दें।
- ✓ खुद में खुश रहें, ध्यान और योग लाभदायक।

तनाव यानि स्ट्रेस से कई बीमारियाँ होती हैं। तनाव से मधुमेह रोगियों की स्थिति बिगड़ती है क्योंकि तनाव शुगर लेवल को बढ़ाता है; तनाव से ब्लड प्रेशर बढ़ता है, स्ट्रेस एटेक आता है; सर दर्द होता है एवं अन्य कई गंभीर बीमारियाँ होती हैं। तनावग्रस्त व्यक्ति का मन भी किसी काम को करने में पूरी तरह नहीं लगता एवं वह अपनी क्षमता के अनुसार किसी कार्य को पूरा नहीं कर पाता। अतः तनाव से बचना चाहिए। यहाँ हम तनाव से बचने के कुछ उपाय बता रहे हैं।

अपनी क्षमता से ज्यादा काम न लें

आप अपनी क्षमता के अनुसार ही काम किया करें। दूसरों से मुकाबला करने से बेवजह आपका तनाव बढ़ेगा। कुछ लोगों को जितना भी काम मिलता जाता है, लालच अथवा दूसरों से होड़ा-होड़ में लेते जाते हैं। ज्यादा मेहनत करना अच्छी बात है लेकिन अपने हाथ में काम उतना ही लें जितना आप बिना किसी तनाव में आये समय पर पूरा कर सकें। अपनी क्षमता से ज्यादा काम लेने से आप काम करते वक्त तनाव में रहेंगे, जिससे आपके साथ साथ आपके

घरवाले भी तनाव में रहेंगे जिसका बुरा प्रभाव सब पर पड़ेगा और आपके काम कि क्वालिटी भी ख़राब होगी जिसके चलते आपको अलग से तनाव झेलना होगा।

सिर्फ काम न करें अपना मन भी बहलायें

आज के ज़माने में घर की ज़रूरतें पूरी करने के लिए कई लोगों को ज्यादा से ज्यादा काम करने की ज़रूरत होती है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि आप हर वक्त सिर्फ काम ही करते रहें। सिर्फ काम करते रहने से आपकी स्फूर्ति कम होती जाएगी और आप पर तनाव हावी होता जायेगा। इसलिए आप चाहे जितना भी काम करें, कुछ समय के लिए मन बहलाने वाली चीज़ों में भी मन लगायें। इससे आप तनाव से बचे रहेंगे साथ ही साथ आपकी कार्य क्षमता भी बढ़ेगी। म्यूजिक सुनें, फिल्म देखें, कोई खेल खेलें, दोस्तों या परिवार के साथ या अपने किसी खास दोस्त के साथ गप्पे लड़ाएं या कहीं घूमने जायें या किसी अन्य गतिविधि में लिप्त हों जिसमें आपका मन लगता हो।

व्यायाम, योग या मेडीटेशन करें

नियमित रूप से योग, व्यायाम या मेडीटेशन करते रहने से आप तनाव से बचे रहेंगे। स्ट्रेस से बचना है तो आपको पर्याप्त नींद लेनी होगी। अपर्याप्त नींद तनाव के साथ साथ ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर बढ़ाती है एवं कई रोगों को भी जन्म देती है। पानी पीने से तनाव बहुत कम होता है। अतः जब भी आप तनाव में हों, पानी पीयें। भरपूर पानी पीते रहने से तनाव आपसे दूर ही रहता है।

प्रार्थना से दूर होता है तनाव

तनाव से निपटने के लिए आप क्या-क्या नहीं करते। व्यायाम से लेकर डॉक्टरी सलाह तक। लेकिन, इन सबके अलावा भी एक अन्य उपाय है। जो आसान होने के साथ-साथ बेहद कारगर भी है और वो है प्रार्थना।

आपने कभी तनाव करने के लिए प्रार्थना का सहारा लिया है। जी, प्रार्थना से न सिर्फ तनाव का स्तर कम

होता है, बल्कि यह कई बीमारियों से बचाने में भी मददगार साबित होती है।

एक नए शोध के मुताबिक प्रार्थना मन के साथ-साथ शरीर को भी स्वस्थ रखती है। साथ ही इससे उम्र में भी इजाफा होता है। यही नहीं प्रार्थना करने से ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में हुए इस शोध में पाया गया कि धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों में कई तरह की बीमारियां होने की आशंका भी कम होती है।

जीवनशैली पर पूजा का प्रभाव

नियमित रूप से पूजा और प्रार्थना करने से मन में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। और प्रार्थना करने वाला व्यक्ति भीतर से अच्छा और बेहतर महसूस करता है। इससे जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलता है। आजकल अनियमित जीवन शैली कई रोगों की मुख्य वजह है। जब आप पूजा व प्रार्थना को अपने जीवन में एक आदत के तौर पर शामिल करते हैं तो निश्चित ही आप अपने अंदर अच्छा बदलाव महसूस करेंगे।

विशेषज्ञों की मानें तो पूजा और संगीत व्यक्ति में बढ़ रहे दबाव का स्तर कम करते हैं। इसका मतलब है ये गतिविधियां जीवन में संतुलन बनाये रखती हैं। प्रार्थना का सकारात्मक प्रभाव देखने के लिये जरूरी है कि उसे दिल से किया जाए। नियमित योग करने वाले लोग जो हमेशा फिट रहते हैं वह भी एक किस्म की पूजा प्रार्थना ही कर रहे होते हैं।

नोट : उपलब्ध सभी सामग्री केवल पाठकों की जानकारी और ज्ञानवर्धन के लिए दी गई है। हमारा आपसे विनम्र निवेदन है कि किसी भी उपाय को आजमाने से पहले अपने चिकित्सक से अवश्य संपर्क करें। हमारा उद्देश्य आपको रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी मुहैया कराना मात्र है। आपका चिकित्सक आपकी सेहत के बारे में बेहतर जानता है और उसकी सलाह का कोई विकल्प नहीं है।

नोएटिक थैरेपी अपनाएं

नोएटिक (मंत्र, संगीत, स्पर्श और प्रार्थना) थैरेपी वह थैरेपी होती है जिसमें बिना दवाई, उपकरण और सर्जरी के इलाज किया जाता है। कई मरीजों पर नोएटिक थैरेपी का इस्तेमाल करने से पाया गया है कि वह, जो सिर्फ दवाई लेते हैं, उनके मुकाबले इनके 30 प्रतिशत ज्यादा सही होने की संभावना होती है साथ ही इन लोगों में एक आश्वासन इस बात का भी होता है कि ये मरीज लंबे समय तक बीमार नहीं पड़ते। प्रार्थना के अन्य लाभ

- ✓ प्रार्थना करने से मन स्थिर और शांत रहता है। क्रोध पर नियंत्रण रखने में मदद मिलती है।
- ✓ इससे स्मरण शक्ति और चेहरे की चमक बढ़ती है।
- ✓ प्रार्थना से मन में सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है, जिससे मन निरोगी बनता है।
- ✓ शोध में पाया गया है नियमित तौर पर ईश्वर का ध्यान करने और प्रार्थना करने से रक्त संचार दुरुस्त रहता है।
- ✓ सामूहिक तौर पर प्रार्थना करने से व्यक्ति के मन में एकता का भाव बढ़ता है और अकेलापन दूर होता है।
- ✓ धार्मिक स्थल तक पैदल चल कर जाने से व्यायाम भी हो जाता है।
- ✓ प्रतिदिन प्रार्थना करने से व्यक्ति को ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है, जिससे एकाग्रता आती है।

राष्ट्रीय पक्षी दिवस

राष्ट्रीय पक्षी दिवस प्रत्येक वर्ष '12 नवम्बर' को मनाया जाता है। 12 नवम्बर (1896) डॉ. सालीम अली का जन्म दिवस है, जो कि विश्वविख्यात पक्षी विशेषज्ञ थे। इन्हें भारत में 'पक्षी मानव' के नाम से भी जाना जाता था।



अली ने पक्षियों से संबंधित अनेक पुस्तकें लिखी थीं। 'बर्ड्स ऑफ इंडिया' इनमें सबसे लोकप्रिय पुस्तक है। इनकी स्मृति में डाक विभाग ने डाक टिकट भी जारी किया है।

वर्ष 1958 में सालिम अली को 'पद्म भूषण' तथा 1976 में 'पद्मविभूषण' से अलंकृत किया

गया था। वर्ष 1985 में इन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया था।

CELEBRATIONS FOR - NOVEMBER & DECEMBER 2021

14 November	:	National Children Day
12 November	:	National Birds Day
25 November	:	World Environment Day
07 December	:	Flag Day
10 December	:	World Human Rights Day

Plan an activity with your unit on these days and send your success stories & photos to "scoutguidejyoti@gmail.com"

मातृभाषा का महत्व

◆ ओमप्रकाश सारस्वत,

शिक्षा संयुक्त निदेशक (से.नि.)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड,
गंगानगर-338401 (बीकानेर)

मातृभाषा बहुत ही संवेदनशील, सीधे-सीधे व्यक्ति की आत्मा से जुड़ा महत्त्वपूर्ण विषय है। बालक जिस भाषा को सबसे पहले सीखता एवं जिसमें स्वयं को अभिव्यक्त करता है, वह उसकी मातृभाषा ही होती है। यह सीखना सहज एवं स्वतः होता है। इसे अन्य शिक्षण अधिगम की तरह सीखना-सिखाना नहीं पड़ता। माँ का दूध पीता, उसके साथ चुहल करता ऊँ-आ करता बच्चा इसे सहजतापूर्वक सीख लेता है। दरअसल सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषागत पहचान व्यक्ति की अपनी मातृभाषा ही होती है। व्यक्ति जितनी सटीक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति मातृभाषा में कर सकता है, कदाचित् अन्य किसी भाषा में नहीं। मातृभाषा के संस्कार उसे माँ के दूध में मिलते हैं और पारिवारिक पृष्ठभूमि उसमें निखार लाती है। दादा-दादी, नाना-नानी इसके प्रबोधक तथा उनके द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियाँ-किस्से एवं की जाने वाली बातें (वार्तालाप) शिक्षण अधिगम सामग्री (टी एल एम) की तरह होती है।

मातृभाषा है सर्वोपरी

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाने की हिमायत शिक्षा पर बनी सभी समितियों, आयोगों एवं शिक्षाविदों ने एक स्वर में की है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते थे कि "मातृभाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा ले ही नहीं सकती। गाय का दूध भी माँ का दूध नहीं हो सकता। माँ का दूध तो बस माँ का दूध ही हो सकता है। इसी प्रकार मातृभाषा का स्थान तो बस मातृभाषा ही ले सकती है। मातृ भाषा माँ के समान अपनी एवं प्यारी लगनी चाहिए।

बड़े से बड़ा पदाधिकारी अथवा धनपति जब अपने परिवारजन के साथ मातृभाषा में अभिव्यक्त होता है, तब उसे अतुलित आनन्द की अनुभूति होती है। तब वह बहुत सहज एवं वास्तविक लगता है। आयु शेष हो जाने पर एक न एक दिन माँ का साथ तो छूट जाता है लेकिन मातृभाषा के रूप में माँ सदैव जिन्दा रहती है। माह प्रदत्त संस्कार सन्तति के जेहन में माँ को सदैव उपस्थित पाते हैं।

माँ की प्रतिरूप है मातृभाषा

एक छोटा बालक जब स्कूल जाता

है। या यों कहे कि वह जब घर रूपी पाठशाला से औपचारिक विद्यालय/आंगनबाड़ी में शिक्षक रूपी माँ के पास जाता है तो वह वहाँ घर के आँगन एवं अपनी माँ को तलाशता है। उसे वह गंध घर-आँगन व माँ की याद दिलाती है। वह रोता है। मचलता है। जरा विचार करें, यहाँ माँ नहीं हो सकती और न ही घर का वह आँगन। अब इन दो से परे एक तीसरी चीज और होती है जिसे पाकर वह ठिठक जाता है, रोना छोड़कर वह कुछ देखने व समझने का प्रयास करने लगता है और वह तीसरी ताकत उसकी मातृभाषा होती है। मातृभाषा जैसी घर में होती है और जिस प्रकार माँ तथा अन्य परिवारजन उसे बोलते उच्चारते हैं, कमोबेश वैसा ही स्कूल में हो सकता है। यह सम्भव है। जो बच्चे मातृभाषा रूपी वाहन में सवार होकर स्कूल आते हैं, वे शिक्षा एवं संस्कार का प्रसाद लेकर ही घर जाते हैं। शिक्षाविद् एवं मनोवैज्ञानिक विद्यालयों में स्थानीय भाषा एवं स्थानीय उत्सव-पर्वों के जानकार शिक्षक लगाने को तभी तो हिमायत करते हैं।

वेदों में महिमा मंडित है मातृभाषा

मातृभाषा के उच्च स्थान को उजागर करते हुए हमारे वेदों में कहा गया है, "मातृभाषा, मातृ संस्कृति तथा मातृभूमि ये तीनों वरदायिनी देवियाँ स्थिर होकर हमारे हृदय में विराजे।" इसका भावानुवाद अंग्रेजी में इस प्रकार किया गया है, "One should respect his mother tongue, motherland and mother culture because they are HAPPINESS giver in a true sence. वेदों, पुराणों, उपनिषदों सभी में मातृभाषा के उच्च महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसका भावपूर्ण यशोगान किया गया है। इसे तो गहराई से पढ़कर एवं अहसास करके ही जाना/समझा जा सकता है। मातृभाषा की महिमा माँ की महिमा के समान है। यह माँ की ओर से बालक को एक अनुपम उपहार होता है, जो जीवनभर उसके साथ रहता है। उन्हें सपने भी मातृभाषा में ही आते हैं। क्या आपको कभी अन्य किसी भाषा में सपना आया है।

मातृभाषा चित को शान्ति प्रदान करती है। मातृभाषा के माध्यम से

शिक्षण—अधिगम के समय बच्चों के चेहरे पर तैरती खुशियाँ उनकी भाव भंगिमा बता देती हैं। हमारे विद्यालयों में प्रायः आठवें कालांश में प्राथमिक कक्षाओं के बालकों को एक साथ बिठाकर समवेत स्वर में गिनती/पहाड़े/दोहे/चौपाइयाँ आदि बुलवाने की परम्परा रही है। गिनती व पहाड़ों के मामले में उसे मालणी (म्हालणी) कहते हैं। जरा बारीकी से अवलोकन कीजिए। पहले कालांश से पढ़ता—पढ़ता बालक सातवें कालांश तक लगभग निदाल सा हो जाता है, लेकिन जैसे ही आठवें कालांश में समवेत स्वर से कुछ बोलने हेतु उन्हें आमंत्रित जाता है, उनकी चाल एवं रंगत दोनों बदल जाती है। उनके चहरे खिल उठते हैं कारण, उन्हें इस दौरान मातृभाषा व घर के संस्कारों की तरह बोलना तथा अभिव्यक्त करना होता है। यह बहुत आनन्ददायी होता है। आनन्ददायी होता है, अतः फलदायी जरूर होता है।

मातृभाषा यात्री आत्मभिव्यक्ति का साधन

मातृभाषा के प्रभाव का एक प्रयोग एक नर्सरी स्कूल में किया गया। वहाँ पढ़ने वाले लगभग तीन वर्ष के बच्चे एक तरह से माँ के विरह में विलाप करने लगते हैं। स्कूल ने ऐसे बच्चों को चिन्हित किया। उनकी माताओं को बुलाकर उनसे बच्चे के साथ बिठाकर वे गीत रिकार्ड किए जिन्हें वे घर में गाते थे। बच्चा जब रोता। समझाने—बुझाने से नहीं मानता, तब एक पर्दे के पीछे टेप रिकार्डर चलाकर माँ की आवाज में उसे कुछ सुनवाया जाता। इस पर शिक्षक कुछ क्रियाएं करतीं कुल मिलाकर बच्चा शान्त हो जाता। यह है मातृभाषा की ताकत यह है माँ की महिमा! विख्यात चिन्तक स्वामी अवधेशानंद गिरि ने कहा है, “मातृभाषा का अर्थ आत्मभिव्यक्ति से है। ऐसी भाषा जिसमें स्वयं की संस्कृति, संस्कार और व्यवहार को सही अर्थों में अभिव्यक्त किया जा सके, वह मातृभाषा होती है।” इसी के साथ हिन्दी का महत्व बताते हुए स्वामीजी कहते हैं कि हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की अभिव्यक्ति है। निसंदेह बालक के लिए मातृभाषा के पश्चात् दूसरी भाषा हिन्दी ही होती है।

मातृभाषा में शिक्षण में आनन्द

मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर सीखने—सिखाने की प्रक्रिया प्रभावी एवं अधिक फलदायी हो जाती है। इसके साथ ही स्थानीय परिवेश के उदाहरण एवं दृष्टान्त सोने में सुहागे के समान होते हैं। एक शिक्षक हिन्दी भाषा का शिक्षण कराते। व्याख्या एवं उदाहरण देने में स्थानीय भाषा का सहारा लेते। विद्यार्थी बहुत रुचि लेकर पढ़ते। उन्हें आनन्द आता और पक्का अधिगम होता। स्थानीय भाषा के माध्यम से हिन्दी भाषा का शिक्षण करवाने वाले गुरुजी का रिजल्ट शत प्रतिशत रहता। स्थानीय भाषा के माध्यम से हिन्दी भाषा का शिक्षण! सुनने में बड़ा अजीब लगता है, लेकिन है सत्य। शत प्रतिशत सत्य। हिन्दी भाषा में अनेक विद्यार्थी विशेष योग्यता (75 प्रतिशत व ज्यादा) अंक प्राप्त करते। शिक्षक बहुआयामी होना चाहिए। विषयगत शिक्षण के साथ—साथ उदाहरण दृष्टान्तों के माध्यम से शिक्षक सामाजिक रीति रिवाजों, परम्पराओं को भी पढ़ा रहा होता है। यह सही है कि जब शिक्षण में मातृभाषा/स्थानीय भाषा का पुट रहता है तब यह सब शिक्षण मनोहारी एवं प्रभावकारी सिद्ध होता है।

बाल्यकाल से सहवरी है मातृभाषा

प्रत्येक समाज में लोकगीत एवं अपने भजन होते हैं जिन्हें सुन—सुनकर बच्चे बड़े होते हैं। उत्सव—पर्व तथा मेले—मगरियों में इन्हें कैसिट्स के जरिए सुना जाता है। जब ये बजते हैं तो सुनने वालों के पैर ठिठक जाते हैं। ऊँची से ऊँची पढ़ाई करके करोड़ों रुपये के पैकेज के साथ बड़े से बड़ा पद प्राप्त करने वाले हाई प्रोफाइल व्यक्ति भी जब अपने पैतृक स्थान पर यह सब देखते—सुनते हैं तो झूमने को मजबूर हो जाते हैं। कारण ये सब उनके खून में हैं। जो खून में रमी है—वह आपकी मातृभाषा है। वे आपके वंशानुगत संस्कार हैं जिन्हें कोई भूल नहीं सकता। इस समय 50—60 आयु वर्ग के व्यक्ति अपने बाल्यकाल को जरा याद करें। उस दौर में दादा—दादी/नाना—नानी के द्वारा गाए

जाने वाले प्रभाती भजनों से उनकी नींद खुलती थी। वे प्रभातियाँ आज भी उनके कानों में गूँज रही हैं। जब भी कहीं उन्हें सुनने का मौका मिलता है, अच्छा लगता है। बाल्यकाल एवं किशोरावस्था में देखे—सुने नाटक, रम्मत, जागरण, जगराते चाहकर भी कोई भूल नहीं सकता। कारण वही, ये सब हमारे खून में हैं। लोक संस्कृति एवं लोक परम्पराओं व स्थानीय मातृभाषा बहुत वजनी होती है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं कि उन्हें संगीत के संस्कार एक स्थानीय बांग्ला लोकगीत को सुनने से मिले। ऐसा हम सभी के साथ है। मातृभाषा/स्थानीय भाषा लोक संस्कृति एवं उज्ज्वल सांस्कृतिक परम्पराओं की संवाहक होती है। विडम्बना यह है कि हम संस्कृति की सुरक्षा, संरक्षण एवं संवर्द्धन तो चाहते हैं लेकिन उसके मजबूत आधार से परहेज रखते हैं। अंग्रेजी भाषा को माध्यम बनाकर सांस्कृतिक संरक्षण की बात किसी दिवास्वप्न से कम नहीं है। अतः मातृभाषा/स्थानीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाकर उनका संबलन करना ही चाहिए। इसमें हमारा खान पान तथा खाने—पीने का ढंग भी शुमार है। ये सब मिलकर लोक संस्कृति को आकार देते हैं।

वाहें हों विदेश, न भूले अपना परिवेश

अमेरिका में रहने वाले राजस्थान मूल के व्यक्तियों ने वहाँ एक संगठन बना रखा है। वे समय—समय पर मिलते रहते हैं। घर में अनिवार्य रूप से मातृभाषा में संवाद करते हैं। लोकगीत एवं संगीत सुनते हैं। राजस्थानी परिधान (साफा, कुर्ता, पायजामा, धोती) समय—समय पर पहनते हैं। राजस्थानी भोजन बनाते तथा परम्परागत तरीके से जमीन पर पालती लगाकर बाजोट पर थाली रखकर भोजन करते हैं। मनुहार करना तथा किसी भी सूरत में झूठन न छोड़ने के संस्कार बच्चे सहज ही में सीखते हैं। कुछ वर्ष पहले उनका एक सम्मेलन जयपुर बिड़ला सभागार में हुआ था। वहाँ 10 वर्ष से छोटे अनेक बच्चे थे जिनका जन्म अमेरिका में हुआ और जो पहली बार राजस्थान आए थे लेकिन उनका व्यवहार, वस्त्र, बोलचाल देखकर यही लगता था कि वे ठेट

राजस्थानी हैं। मातृभाषा की जड़ें बहुत गहरी होती हैं। मातृभाषा वृक्ष बहुत विशाल होता है। इसकी छाया बहुत शीतल होती है। हमें मातृभाषा के महत्व को समझकर उसे यथोचित सम्मान देना चाहिए। भाषा के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दो पहलू होते हैं। हमें सांस्कृतिक पहलू पर अधिक ध्यान देना चाहिए। मातृभाषा उन सब जगहों पर है जहाँ माँ और बालक हैं। वह सार्वभौमिक है। वही भाषा शिक्षा का माध्यम बन सकती है जो सार्वभौमिक हो। इसे जरा और स्पष्ट कर लेते हैं। कहने का आशय यह है कि 'मातृभाषा' परिभाषा की विशेषताएँ रखने वाली भाषा हर उस स्थान पर है जहाँ माँ और बच्चे हैं। माँ और बच्चे सर्वभौमिक हैं तो मातृभाषा की सार्वभौमिक हुई। गाँधीजी ने कहा है कि सार्वभौमिकता की कसौटी पर खरी उतरने वाली भाषा ही शिक्षा का माध्यम बन सकती है।

गाँधी जी और मातृभाषा

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाने के पक्ष में गाँधी सदैव मुखर रहे। वर्ध सम्मेलन (1937) से निकली बुनियादी शिक्षा/नई तालीम में मातृभाषा को अपेक्षित महत्व दिया गया है। महात्मा गाँधी के शिक्षा के माध्यम बाबत विचारों को लेकर एक पुस्तक *Medium of Instruction* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद से प्रकाशित हुई थी (1954) इसमें वे कहते हैं, "हम यह समझने लगे हैं कि अंग्रेजी जाने बगैर कोई 'बोस' नहीं बन सकता। इससे बड़े अंध विश्वास की बात कोई और हो नहीं सकती। जैसी लाचारगी के शिकार हम हो गए लगते हैं, वैसी लाचारगी किसी जापानी को तो महसूस नहीं होती। शिक्षा का माध्यम तत्काल बदल देना चाहिए। प्रान्तीय भाषाओं को हर कीमत पर उनका उचित स्थान दिया जाना चाहिए। प्रान्तीय भाषाओं की प्रतिष्ठा और उनके महत्व को बढ़ाने के लिए मैं चाहूँगा कि प्रान्त की कानूनी अदालतों की भाषा उस प्रान्त की भाषा ही बना देनी चाहिए। प्रान्तीय विधान मण्डलों की कार्यवाही उसी प्रान्त की भाषा में होनी चाहिए और अगर किसी प्रान्त में एक से अधिक भाषाएँ प्रचलित हैं तो उन सभी भाषाओं में चलाई जा सकती है।" यहाँ महात्माजी का जीवन सत्य और अहिंसा की खुली किताब था। वे जो कहते थे ठीक

वैसा ही करते भी थे। बल्कि कहना तो यह चाहिए कि वे जो कहते थे, कहने से पहले स्वयं करके/कर सकने की कसौटी पर कस कर, ठोक-बजाकर उपयुक्त पाए जाने पर ही वैसा करने के लिए कहते थे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने एक संस्था टॉलस्टॉय आश्रम के नाम से स्थापित की थी जिसमें वे स्वयं पढ़ाते और शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग करते थे।

शिक्षा का माध्यम हो मातृभाषा

टॉलस्टॉय आश्रम में शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए गाँधी जी ने अनेक प्रयोग किए। ये प्रयोग शाला समय, शिक्षा के माध्यम, परीक्षा एवं मूल्यांकन आदि सबके लिए थे। अपनी आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' के अक्षर ज्ञान अध्याय (33वाँ अध्याय) में वे लिखते हैं, 'अक्षर ज्ञान के लिए अधिक से अधिक तीन घण्टे रखे गए थे। कक्षा में हिन्दी, तमिल, गुजराती और उर्दू भाषाएँ सिखाई जाती थीं। प्रत्येक बालक को उसकी अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती थी।'

अपने प्रयोगों एवं परिणामों के आधार पर ही महात्मा गाँधी ने शिक्षा का माध्यम बच्चे की मातृभाषा/स्थानीय भाषा को बनाने तथा शिक्षक के स्थानीय लोक संस्कृति से परिचित होने पर जोर दिया था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में इन पर पर्याप्त जोर दिया गया है। गाँधी लिखित पुस्तक *Medium of Instruction* की ये पंक्तियाँ सदैव सार्थक रहेगी, "मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि जिन लोगों के हाथों में युवाओं की शिक्षा है, वे यदि निर्णय लेना चाहेंगे तो पाएँगे कि मातृभाषा मनुष्य के मानसिक विकास के लिए उसी प्रकार स्वाभाविक है जिस प्रकार वह माँ से सीखता है। इसलिए कोई अन्य भाषा थोपने में मातृभूमि के विरुद्ध पापाचार समझता हूँ।"

शिक्षण बनें हरावल

नीति और नियमों में भले ही कुछ भी प्रावधान हो जाए, जब तक उनकी उचित क्रियान्विति न की जाए, तब तक अर्थहीन है। यह क्रियान्विति करने वाले शिक्षक हैं। उन्हें सम्पूर्ण मन और क्षमता के साथ इस दिशा में आगे आना होगा। सैकड़ों विद्यालयों एवं हजारों शिक्षकों से

साक्षात्कार (निरीक्षण एवं संवाद) के उपरान्त सार बात यही है कि जिन शिक्षकों ने कुछ नया करने का ठाना है। और पूर्ण प्रतिबद्धता एवं समर्पण के साथ उसके करने में संलग्न हुए हैं, उन्हें सफलता मिली है। प्रकृति एवं परमात्मा का विद्यान ही कुछ ऐसा है। जो सच्चे भाव से लग जाता है, रास्ते आगे से आगे मिलते चले जाते हैं। शिक्षा के साथ तो कुछ ज्यादा ही है। मातृभाषा एवं मातृ संस्कृति के उत्थान के लिए शिक्षकों से हरावल दस्ते के रूप में प्रभावशाली भूमिका निभाने की अपेक्षा की जानी चाहिए और यह निश्चित है कि वे अपनी उज्ज्वल परम्परा के अनुसार उसमें सफल होंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में मातृभाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 विभिन्न स्तरों पर चिन्तन-मनन एवं बहस की प्रक्रिया से होकर शीघ्र ही लागू होने को है। सन् 1986 की शिक्षा नीति के उपरान्त तीन दशक से अधिक का समय निकल गया है। एक तिहाई सदी लगभग सभी पूर्व-मानकों को बदलकर नए मानक स्थापित कर देने वाली होती है। 1986-2019 का काल खण्ड तो वैज्ञानिक प्रगति एवं सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से बहुत अहम् कहा जा सकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्तमान शताब्दी के स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2050 तक का विजन दृष्टि में रखकर बनाई गई है। इस नीति में मातृभाषा की उपादेयता एवं महत्व को ध्यान में रखते हुए कहा गया है, "कम से कम कक्षा 5 तक लेकिन प्राथमिकतः कक्षा 8 तक, जहाँ भी जरूरी हुआ एक लचीले भाषा-दृष्टिकोण के साथ शिक्षा स्थानीय भाषा/मातृभाषा में होगी।" इस प्रकार प्रस्तावित शिक्षा नीति में मातृभाषा को नए दृष्टिकोण में महत्वाकित किया गया है। यह निश्चय ही सराहनीय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्विति के समय मातृभाषा के पक्ष को समुचित स्थान दिये जाने से निश्चय ही राष्ट्र की शिक्षा-दीक्षा की धारा में सकारात्मक एवं संस्कारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेंगे जिससे संसार में भारत की गरिमा और पढ़ेगी।

(लेखक राजस्थान राज्य शिक्षा नीति समिति के सदस्य हैं।)

वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम की सुनहरी यादें



◆ भाविक सुथार
रोवर
बांसवाड़ा

मैं भाविक सुथार जनजाति क्षेत्र के बांसवाड़ा जिले के सालिया गाँव से हूँ। मेरा स्काउटिंग में प्रवेश स्काउट मास्टर श्री नाथजी डामोर के निर्देशन में राउमावि सालिया से राष्ट्रपति स्काउट अवार्ड तक पहुँचा जो मेरे लिए बहुत गौरव का विषय है। उसके बाद मेरी हमेशा चाह रही कि मुझे अन्तराष्ट्रीय स्तर की गतिविधि में भाग लेने का अवसर मिले। अरावली कॉलेज बांसवाड़ा से मेरी स्नातक की पढ़ाई पूर्ण की और इसी के साथ रोवरिंग प्रारम्भ की। उसके बाद जिला मुख्यालय से 55 वाँ प्रताप ओपन रोवर क्रु से श्री दीपेश शर्मा सी.ओ. स्काउट के नेतृत्व में राष्ट्रपति अवार्ड रोवर तक पहुँचा इसी के साथ मेरी जो चाहत का वह पल आ ही गया। राष्ट्रीय मुख्यालय ने मेरा चयन कर 14 वें वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम एवं 42 वीं वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम में भाग लेने का अवसर प्रदान किया और भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मुझे मिला।

सबसे पहले तो मैं धन्यवाद करना चाहूँगा हमारे प्रदेश के राज्य मुख्यायुक्त एवं अन्तराष्ट्रीय कमिश्नर श्री जे.सी. महांति जी, भारत स्काउट गाइड के निदेशक श्री राजकुमार कौशिक, संयुक्त निदेशक श्री अमर बी. क्षेत्री एवं राष्ट्रीय और राज्य मुख्यालय के समस्त अधिकारियों का जिन्होंने मुझे 14 वीं वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम एवं 42 वीं वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम में भाग लेने का

सुअवसर प्रदान किया और भारत का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्रदान किया।

वर्ल्ड स्काउटिंग के इतिहास में पहली बार 172 एनएसओ के 764 युवाओं ने 18 से 22 अगस्त 2021 तक आयोजित 14 वें वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम में भाग लिया, ताकि इसे अब तक का सबसे बड़ा यूथ फोरम बनाया जा सके। भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के 06 युवा – श्री रितेश अग्रवाल (पश्चिम बंगाल), श्री मधुसूदन एलएन (कर्नाटक), श्री शुभम सिंह (पूर्वी रेल्वे), श्री भाविक सुथार (राजस्थान), श्री सुप्रीत बालाजी (कर्नाटक) और श्री मालस्वामकिमा राल्ते (मिजोरम) ने बीएसजी का नाम ऊँचा रखने के लिए पूरे उत्साह व समर्पण के साथ राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली से एक प्रतिनिधिमंडल के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

विश्व स्काउट मूवमेंट संगठन (WOSM) द्वारा आयोजित 42वाँ विश्व स्काउट सम्मेलन दिनांक 25 से 29 अगस्त 2021 तक आयोजित हुआ। विश्व स्काउट सम्मेलन हर 3 साल में होता है और विश्व स्काउट समिति के 12 सदस्य मतदान द्वारा दुनिया भर में चुने जाते हैं जो दुनिया के अग्रणी युवा संगठन में निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रचलित महामारी के कारण इस वर्ष विश्व सम्मेलन ऑनलाइन आयोजित किया गया।

शेष पृष्ठ 24 पर



गतिविधि दर्पण

मण्डल, जिला एवं स्थानीय संघ स्तर पर आयोजित शिविरों, गतिविधियों, दिवसों इत्यादि की संक्षिप्त रिपोर्ट

भरतपुर संभाग

बिगनर्स कोर्स आयोजित कर दी प्रारंभिक जानकारी

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलारना डूंगर, सवाई माधोपुर में स्काउट प्रभारियों का एक दिवसीय स्थानीय संघ स्तरीय बिगनर्स कोर्स का आयोजन मुख्य अतिथि चन्द्रशंकर श्रीवास्तव सी.ओ. स्काउट सवाई माधोपुर, विशिष्ट अतिथि अलीमुद्दीन खान प्रोग्राम अधिकारी समसा सवाई माधोपुर, नफीस खान व श्री मुजफ्फर खान आर पी बॉली एवं श्री भगवान सहाय मीना प्रभारी सहायक जिला कमिशनर स्काउट व प्रधानाचार्य राउमावि मलारना डूंगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बिगनर्स कोर्स संचालक श्री शशिभूषण शर्मा सचिव स्थानीय संघ खंडार ने बताया कि एक दिवसीय कोर्स के



अंतर्गत संभागियों को स्काउट गाइड गतिविधि संचालन के लिए प्रारंभिक जानकारी प्रदान करते हुए स्काउट आंदोलन की कहानी, उद्देश्य, सिद्धांत, नियम, प्रतिज्ञा, प्रार्थना, आदर्श वाक्य, सेल्यूट चिन्ह, बायां हाथ मिलाना, संगठन की संरचना व विभिन्न अनुभाग, यूनिट पंजीकरण व यूनिट शुरू करना, स्काउट गाइड की योग्यता अभिवृद्धि एवं स्काउट गाइड प्रभारियों की योग्यता अभिवृद्धि की जानकारी प्रदान की गई। हारून अहमद सचिव स्थानीय संघ मलारना डूंगर ने बताया कि कार्यक्रम का संचालन शरीफ मोहम्मद ने जबकि संभागियों का स्वागत व धन्यवाद स्थानीय संस्था प्रधान ने किया। कोर्स के संचालक दल में सहायक सचिव श्री महेश शर्मा, स्काउटर अभिषेक शर्मा ने सहयोग प्रदान किया।

बीकानेर संभाग

संभागियों ने बॉर्डर का किया अवलोकन

- भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में 6 से 10 सितंबर तक 5 दिवसीय राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर का समापन माध्यमिक शिक्षा निदेशक सौरव स्वामी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस



अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए.एच. गौरी उपस्थित रहे। मंडल चीफ कमिशनर विजय शंकर आचार्य ने स्मृति चिन्ह एवं स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया। वार्षिक प्रतिवेदन शिविर संचालक सहायक राज्य संगठन आयुक्त मानमहेन्द्र सिंह भाटी ने प्रस्तुत कर बताया कि शिविर में 119 रोवर रेंजर ने राजस्थान के विभिन्न जिलों से सहभागिता करते हुए राज्यपाल महोदय से प्राप्त होने वाले पुरस्कार के पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त किया, साथ ही सांचु बॉर्डर देशनोक बीकानेर के दर्शनीय स्थलों में अवलोकन के साथ एडवेंचर गतिविधियों में भी सहभागिता की। अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए.एच. गौरी जी ने कहा रोवर रेंजर के रूप में युवा देश के सुनागरिक के रूप में सेवक का पर्याय है। सी.ओ. स्काउट सिरौही नरेंद्र कुमार खोरवाल, सहायक राज्य संगठन आयुक्त जोधपुर बाबू सिंह राजपुरोहित, सहायक राज्य संगठन आयुक्त बीकानेर मानमहेन्द्र सिंह भाटी, सी.ओ. गाइड जोधपुर सुयश लोढा, सी.ओ. पाली जितेंद्र सिंह भाटी, सी.ओ. स्काउट राज्य मुख्यालय, एल.आर. शर्मा, सी. ओ. गाइड बीकानेर ज्योति रानी महात्मा, सोहन गोदारा द्वारा अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन जोधपुर के सहायक राज्य संगठन आयुक्त बाबू सिंह राजपुरोहित ने किया।

जयपुर संभाग

प्रवेश हेतु आवेदन किये आमंत्रित

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सीकर पर रोवर स्काउट व रेंजर गाइड हेतु 20 युवाओं ने आवेदन किया। रोवरिंग में प्रवेश हेतु 26 अगस्त तक राजस्थान कार्यालय में सम्पर्क कर प्रातः 10 बजे से साँय 5 बजे तक स्काउट की सीनियर शाखा 15 से 22 वर्ष तक स्कूल एवं महाविद्यालयों के छात्र रोवर स्काउट एवं 15 से 22 वर्ष की छात्राएँ रेंजर गाइड हेतु आवेदन आमंत्रित किये गये, जिसके तहत आवेदन हेतु अपनी पास पोर्ट साईज फोटो, जन्म तिथि प्रमाण पत्र एवं आधार कार्ड की कॉपी आवश्यक बताई गई। सी.ओ. स्काउट



बसन्त लाटा ने बताया कि आवेदन के बाद इन छात्र छात्राओं को विभिन्न अवसरों के माध्यम से तथा शिविर आयोजित कर चरित्र, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन एवं सेवा, आपदा प्रबन्धन, प्राथमिक चिकित्सा, साहसिक भ्रमण, मैपिंग, पर्वतारोहण, तीरंदाजी, राइफल शूटिंग, घुड़सवारी, रोक क्लाइम्बिंग, रेपलिंग सहित अनेक प्रगतिशील प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसी अवधि में स्थानीय संघ मुख्यालय के दौता, फतेहपुर, खण्डेला, पलसाना, नीमकाथाना, पाटन, रींगस, श्रीमाधोपुर, थोई, अजीतगढ़ आदि मुख्यालयों पर भी स्काउट गाइड के सचिव से सम्पर्क कर उस क्षेत्र के छात्र छात्राएं आवेदन कर रोवर स्काउट एवं रेन्जर गाइड में भर्ती हो सकते हैं। उसके बाद सम्भाग स्तरीय अवार्ड, राज्य पुरस्कार एवं राष्ट्रपति अवार्ड हेतु तैयारी भी करवाई जायेगी।

वृक्षों की रक्षा का लिया संकल्प

- भारत स्काउट व गाइड, जिला सीकर के तत्वावधान में जिले भर में स्काउट गाइड सदस्यों ने वृक्षों की रक्षा के संकल्प के साथ वृक्षों के रक्षा सूत्र बाँधने का कार्य किया। जिला मुख्यालय सीकर पर बसन्त कुमार लाटा सी ओ स्काउट ने अन्य स्काउट गाइड सदस्यों पुरुषोत्तम लाल स्वामी, दुर्गेश नन्दनी, मरुधर ऑपन रोवर क्रू के ग्रुप लीडर गुरुदयाल सिंह नरुका के साथ वृक्षों की सेवा का संकल्प लिया एवं रक्षा सूत्र बान्धने का कार्य किया।

खाटूश्यामजी में बनवारी लाल कुमावत प्र.कमिशनर स्थानीय संघ पलसाना, पवन कुमार शर्मा सचिव पलसाना, फतेहपुर में मोतीराम महिचा ट्रेनिंग काउन्सलर, रामगढ़ शेखावाटी में हरिशचन्द्र वर्मा सचिव, अर्जुन लाल शर्मा स्काउटर ढाढण,



शम्भुदयाल सैनी स्काउटर पाटन, शारदा देवी संयुक्त सचिव पाटन, रामनिवास यादव स्काउटर रामसिंहपुरा डाबला, सुरेन्द्र सिंह शेखावत कोषाध्यक्ष स्थानीय संघ नीमकाथाना ने नृसिंहपुरी में परिवार सहित, गिरधारी लाल सैनी स्काउटर ढाणी अहिरान, पुरुषोत्तम लाल स्वामी स्काउटर श्री कल्याण उ.मा.वि. सीकर ने अपने घर पर पौधों के रक्षा सूत्र बांधकर पौधों की रक्षा का संकल्प लिया।

स्थानीय संघ के प्रशिक्षण केन्द्र बनाथला पर स्काउट सचिव रामलाल चौधरी, सहायक सचिव फूल मोहम्मद, स्काउट मास्टर बाबूलाल कुमावत, रोवर पिताम्बर, राहुल, राजू कुमावत, राहुल वर्मा व अन्य स्काउट सदस्यों ने 1000 से अधिक पौधों के राखी बांधी तथा पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया। इसी प्रकार जिले भर में स्थानीय संघों में स्काउट गाइड सदस्यों ने जगह जगह वृक्षों की निराई गुड़ाई की, परिण्डे लगाये, रक्षा सूत्र बान्धे पौधों एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

जोधपुर संभाग

साइकिल रैली निकाल दिया सदभावना का संदेश

- 8 अक्टूबर को जिला प्रशासन, सिरोही के निर्देशन में एकता एवम सदभावना के संदेश लेकर साइकिल रैली का आयोजन किया गया। सी.ओ. स्काउट नरेन्द्र खोरवाल ने बताया कि



शासन सचिव कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार जयपुर के निर्देशानुसार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 175 वीं जयंती वर्ष एवं स्वतंत्रता दिवस के 75 वर्षगांठ के तहत माह अक्टूबर में 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर गांधी सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके तहत एकता एवं सदभावना के संदेश पर साइकिल रैली का आयोजन किया गया। साइकिल रैली को राजेंद्र सांखला जिला संयोजक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं रमेश कुमार बहेड़िया उपखंड अधिकारी सिरोही ने अहिंसा सर्किल से हर झंडी दिखाकर रवाना किया। साइकिल रैली गोपाल सिंह राव पर्यावरण प्रेमी के नेतृत्व में अहिंसा सर्किल से पैलेस रोड़ होती हुई सरजावा गेट से जेल चौराहा घूमकर पुनः अहिंसा सर्किल समाप्त हुई। कार्यक्रम में सहायक निदेशक समग्र शिक्षा अभियान मूल

शंकर मेघवाल, जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा भंवर सिंह, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा नरेश परमार, गांधी स्मृति दर्शन समिति के उपखंड संयोजक जयंतिलाल माली एवं स्काउट गाइड रोवर रेंजर मौजूद रहे।

स्काउट शिविर में गांधी दर्शन की सीख

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सिरौही के तत्वावधान में राज्य पुरस्कार स्काउट गाइड रेंजर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। सी. ओ. स्काउट नरेन्द्र खोरवाल के अनुसार राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर के चतुर्थ दिन मुख्य अतिथि राजेंद्र सांखला जिला संयोजक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं विशिष्ट अतिथि जयंती भाई माली उपखंड संयोजक गांधी एवं दर्शन समिति रहे। श्री सांखला ने



कहा कि महात्मा गांधी एक साधारण पुरुष ना होकर महापुरुष हैं जिनका मुकाबला तो कोई नहीं कर सकता लेकिन अगर उनके सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांतों को व्यक्ति अपने जीवन में उतार ले तो समाज में एक अलग पहचान बनाई जा सकती है। गांधी जी की छोटी-छोटी बातों से बड़ी बड़ी सीख ली जा सकती है। शिविर में स्काउट बालकों के अनुशासन से सांखला बहुत प्रभावित हुए एवं उन्हें अपने निजी जीवन में भी इसी अनुशासन को अपनाने के लिए कहा क्योंकि वर्तमान में समाज को इसकी बहुत आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि जयंतीभाई माली उपखंड संयोजक गांधी एवं दर्शन समिति ने बालकों को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने एवं उसके लिए भरसक प्रयत्न करने को कहा।

कोटा संभाग

रोवर रेंजर प्रशिक्षण में सीखे गुर

- भारत स्काउट व गाइड, जिला कोटा के तत्वावधान में श्रीमती प्रीति कुमारी सर्कल ऑर्गेनाइजर गाइड के संचालन में पुलिस विभाग के सहयोग से सात दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय छावनी में किया गया, जिसमें कमांडो सोनिया गुर्जर एवं श्रीमती मनमर ने गाइड एवं अन्य छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर का अवलोकन सहायक राज्य संगठन



आयुक्त कोटा दिलीप कुमार माथुर, जिला कमिश्नर कब वरुण जी एवं सर्कल ऑर्गेनाइजर स्काउट प्रदीप चित्तौड़ा आदि ने किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती मीनाक्षी मीणा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

रोवर रेंजर प्रशिक्षण में सीखे गुर

- भारत स्काउट व गाइड के तत्वावधान में राज्य स्तरीय राज्य पुरस्कार रोवर रेंजर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 6 से 10 सितंबर तक स्काउट गाइड प्रशिक्षण केंद्र रीडमलसर बीकानेर में आयोजित किया गया, जिसमें कोटा जिले से सीनियर रोवर मेट सौरभ सोनी के नेतृत्व में 8 रोवर ने भाग लिया। शिविर के दौरान बीएसएफ डीआईजी पुष्पेन्द्र सिंह



राठोड़ मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। शिविर संचालक मानमहेन्द्र सिंह भाटी एवं सह-संचालक बाबू सिंह राजपुरोहित के मार्गदर्शन में रोवर रेंजर को भारत पाकिस्तान सांचू बॉर्डर देशनोक करनी माता मंदिर आदि का भ्रमण करवाया। 5 दिवसीय शिविर के दौरान रोवर रेंजर को वॉल क्लाइम्बिंग, ज़िप लाइन, टायर टनल आदि साहसिक गतिविधियां करवाई गयी। इस अवसर पर सीओ स्काउट सिरौही नरेंद्र खोरवाल, सीओ गाइड बीकानेर ज्योति रानी, सीओ स्काउट पाली जितेन्द्र भाटी, सीओ गाइड जोधपुर सुयश लोढ़ा आदि मौजूद रहे। रोवर लीडर एल.सी. अग्रवाल ने बताया की सीनियर रोवर मेट सौरभ सोनी ने कई बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में कोटा जिले का नाम रोशन किया, जिससे कोटा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली है।

नुक्कड़ नाटक द्वारा नशा-मुक्ति का संदेश

- भारत की स्वतंत्रता की 75वीं आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में स्काउट व गाइड जिला मुख्यालय, झालावाड़ एवं प्रेरणा जन कल्याण संस्थान झालरापाटन (झालावाड़) की ओर से बस स्टैंड परिसर झालावाड़ में नशा मुक्ति पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया और साथ ही जिला प्रशिक्षण



आयुक्त श्री कृष्णमोहन देवड़ा ने गीतों के माध्यम से जनचेतना एवं नशे के दुष्परिणामों की जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री महेन्द्र कुमार निम्हल, श्री रामकृष्ण शर्मा सी.ओ.(स्काउट), हरिओम लवशी, आदित्य देवड़ा, दुर्गाशंकर, भोलाराम विरम, ललित, दिनेश, विनोद, संदीप आदि रोवर्स का इस नुक्कड़ नाटक को करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता

- 75 वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर राजकीय कला महाविद्यालय कोटा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोटा का प्रतिनिधित्व करने पर महाविद्यालय के छात्र सीनियर रोवर सौरभ सोनी को प्राचार्य डॉ संजय भार्गव द्वारा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। स्काउट प्रभारी व रोवर लीडर एल.सी. अग्रवाल ने बताया की सीनियर रोवर सौरभ सोनी ने श्रीलंका ग्लोबल कल्चर जंबुरी, एशिया मेसेंजर ऑफ पीस कॉन्फ्रेंस, अफ्रीका स्काउट जंबुरी, ग्लोबल किचन जंबुरी यूएसए, राष्ट्रीय यूथ एडवेंचर शिविर मनाली में भाग लिया है। सोनी के द्वारा कोरोना काल में भी विभिन्न सेवा कार्य जैसे भोजन सामग्री वितरण पौधा रोपण आदि उत्कृष्ट कार्य किए



अक्टूबर, 2021

गए। इस अवसर पर रेंजर प्रभारी प्रीति नागोरा विनीता राय आदि महाविद्यालय के सदस्य मौजूद रहे।

उदयपुर संभाग

निपुण एवं राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, राजसमन्द पर पाँच दिवसीय निपुण रोवर रेंजर प्रशिक्षण व राज्य पुरस्कार स्काउट व गाइड प्रशिक्षण शिविर सर्वधर्म प्रार्थना सभा के साथ सम्पन्न हुआ। सी.ओ.स्काउट छैल बिहारी शर्मा ने बताया की 14 से 18 सितम्बर शिविर में बालक-बालिकाओं



को प्राथमिक चिकित्सा, कम्पास का उपयोग, नक्शा पढ़ना, खोज के चिन्ह, ध्वज शिष्टाचार व ध्वजों की जानकारी, गाठें लगाना आदि के नियम प्रतिज्ञा, प्रार्थना, झण्डा गीत प्रशिक्षण दिया गया। जिला मुख्यायुक्त डॉ. राकेश तैलंग जिला कमिश्नर रेंजर डॉ. रचना तैलंग, जिला प्रशिक्षण आयुक्त गाइड शीला पोखरना ने गुरु सौभाग्य महिला सेवा संस्थान की ओर से जिला मुख्यालय पर विकास कार्य हेतु 35,100 रुपये का चैक जिला मुख्यायुक्त को सौंपा। शिविर संचालक दल में डॉ. उषा शर्मा, धर्मेन्द्र कुमार गुर्जर, स्थानीय संघ सचिव राकेश सांचीहर, छोटु लाल बारबर, जसराज सरगरा, सुरेश चन्द्र खटीक, गाइडर कलावती शर्मा आदि ने अपना प्रशिक्षण का दायित्व निभाया।

गाइड कैप्टिन बेसिक कोर्स

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, राजसमन्द पर सात दिवसीय गाइड कैप्टिन बेसिक कोर्स का आयोजन 8 से 14



स्काउट गाइड ज्योति | 23

सितम्बर तक किया गया, जिसका समापन समारोह नगर परिषद राजसमंद के सभापति अशोक टांक के मुख्य आतिथ्य व आशा पालीवाल पूर्व चेयरपर्सन नगरपालिका राजसमंद के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता शीला पोखरना सहायक लीडर ट्रेनर राजसमंद ने की तथा शिविर संचालिका के रूप में लीडर ट्रेनर गाइड अंजना शर्मा थी। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना सभा से की गई व शिविर में संभागी गाइडरों द्वारा एक फ्रीज जिला मुख्यालय को भेंट किया गया। इस अवसर पर राकेश सांचीहर संयुक्त सचिव स्थानीय संघ राजसमंद, डा. उषा शर्मा रेंजर लीडर एस.आर. के.कॉलेज राजसमंद, गाइडर कलावती शर्मा, निर्मला राणा, रोवर देवीलाल गुर्जर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राधेश्याम राणा ने किया।

प्रशासनिक अधिकारियों से भेंट

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, चित्तौड़गढ़ सी.ओ. स्काउट चन्द्र शंकर श्रीवास्तव ने जिला कलेक्टर और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से शिष्टाचार भेंट कर स्काउट गाइड गतिविधियों से अवगत कराया। सी ओ स्काउट ने जिला



कलेक्टर श्री तारा चंद मीना, अतिरिक्त जिला कलेक्टर श्री रतन कुमार स्वामी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद श्री दाता राम और उपखंड अधिकारी चित्तौड़गढ़ श्री श्याम सुंदर बिश्नोई का स्काउट स्कार्फ व बोगल पहनाकर स्काउट गाइड रीति रिवाज से स्वागत किया। जिला प्रशासन ने हर संभव सहयोग प्रदान करने के लिए कहा। इस अवसर पर स्थानीय संघ चित्तौड़गढ़ सचिव देवकीनंदन वैष्णव, रोवर दिव्यांशु कुमावत उपस्थित थे।

पृष्ठ 19 का शेष

वर्ल्ड स्काउट यूथ फोरम की सुनहरी यादें

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के 20 सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें श्री एम.ए. खालिद, श्री पीजीआर सिंधिया, श्री जे.सी. महांति, श्री मधुसूदन अवला, श्री कुमार रितेश अग्रवाल, श्री मधुसूदन एलएन ने भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। सम्मेलन में 14 पर्यवेक्षक जिनमें श्री राजेश अग्रवाल, डॉ. अमरजीत कुमार शर्मा, श्री मोहम्मद खान, श्री सुमित मुखोपाध्याय, श्री जितेश सेठ, श्री पंकज गुप्ता, श्री अमर बी. क्षेत्री शामिल रहे। राजस्थान प्रदेश से राज्य मुख्यायुक्त श्री जे. सी. महांति जी और श्री भाविक सुथार ने भाग लिया।

यूथ फोरम व कॉन्फ्रेंस में बहुत कुछ नया सीखने का अवसर मिला। नये नये दोस्त बनाने, मनोरंजन, खेल, ब्रेक आउट सेशन, प्रिनरी सेशन आदि के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिला। दूसरे देशों के फ्यूचर प्लान, उनके नये विचार, सेफ फ्रॉम हार्म, लीडरशिप, उनके वहाँ की संस्कृति, स्काउटिंग, नये एजेंडा, उनका रहन सहन, वेशभूषा, भोजन के बारे में जाना और अपने विचार भी एक-दूसरे से साझा किये। बहुत कुछ नया सीखा। हमारे युवा वर्तमान में कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जो हमने कभी नहीं देखी... उनसे लड़ने की प्रेरणा मिली और उससे लड़ा कैसे जाए, नई चुनौतियों का सामना कैसे करें, युवाओं को साथ में लेकर कैसे कार्य करें, एक अच्छे लीडर कैसे बनें इत्यादि कई बातें सीखी। मैंने महसूस किया कि आज हर युवा में उत्साह लाने की जरूरत है और उत्साह के साथ साथ सही निर्णय लेना जरूरी है। विश्व को बेहतर बनाने के लिए कैसे कार्य करें...यह हमने

जाना और समझा।

कॉन्फ्रेंस के दौरान मैंने कई नए दोस्त बनाए। मेकी एम. साउथ अफ्रीका, हिंद मोरक्को से, फातिहा मलेशिया से, लेह यूके से मेरे अच्छे दोस्त बन गए। कई प्रश्न पूछे— जैसे "हम आपके देश के अनुभव से क्या सीख सकते हैं?" व "हम एसडीजी को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं?" उन्हें भारत आने और आईटी का अनुभव करके इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को जानने के लिए भी आमंत्रित किया। उन्होंने मेरे एसडीजी प्रश्न का उत्तर बहुत आसानी से यह कहते हुए दिया कि एक संक्षिप्त रिपोर्ट को इंटरनेट या सोशल मीडिया के माध्यम से जितना संभव हो सके एसडीजी को बढ़ावा देने के लिए साझा किया जा सकता है। नई पीढ़ी को सिखाएं कि एसडीजी का क्या मतलब है। कोविड-19 के दौरान एस.डी.जी. पर किए गए कार्य के बारे में कई अन्य लोगों के साथ संचार कर के इसे और अधिक फैलाने का कार्य करने वाले कुछ छोटे समूह बनाकर जागरूकता फैलाएं। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग हमें जीने की कला, एक दूसरे के प्रति सद्व्यवहार, नेतृत्व, भाईचारा, समाज के प्रति जागरूकता, सेवा भावना और अभाव में कैसे जीना है इत्यादि सिखाती है।

मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ उसके लिए मैं हृदय से राज्य व मंडल के पदाधिकारियों व अधिकारियों का आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही उन सभी का आभार जिन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान करने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग किया।

दक्षता पदक

स्काउट गाइड ज्योति में दक्षता पदकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है यह जानकारी प्रशिक्षण के मद्देनजर उपयोगी साबित होगी। इस अंक में ज्ञानार्जन के लिए 'मरुवासी' दक्षता बैज की जानकारी दी जा रही है।

मरुवासी DESERT FOLK

मरुवासी दक्षता बैज द्वारा मरुभूमि से संबंधित प्रारम्भिक एवं आवश्यक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से इसका पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। मरुवासी दक्षता बैज प्राप्त करने के लिए मरुभूमि में जीवन, उसका प्रकृति अध्ययन एवं जल और सिंचाई से संबंधित ज्ञानोपार्जन करने की दृष्टि से निम्नानुसार पाठ्यक्रम पूर्ण करना होगा –

डेजर्ट फॉक (मरुवासी) के लिए निम्नलिखित जानकारी होनी चाहिए-

(1) मरुभूमि में जीवन -

स्वयं के अध्ययन और मरु जीवन का अवलोकन करने के आधार पर निम्न के बारे में जाने-

- भौगोलिक परिस्थितियाँ – भूमि, नदियाँ, जलवायु आदि।
- निवासियों की दैनिकचर्या
- जीवन स्तर व पद्धति, सामान्यता पहने जाने वाली गणवेशें, भोजन-सम्बन्धी आदतें इत्यादि।
- लोगों की सामान्य आदतें, विशेष रीति-रिवाज, मान्यताएँ, धर्म, अन्धविश्वास, सामाजिक बन्धन।
- जीवन-यापन के तरीके।
- प्रकृति द्वारा उत्पन्न की गई लोगों की सामान्य समस्याएँ तथा उनके समाधान के तरीके।

उपरोक्त से सम्बन्धित तीन भ्रमण करें तथा उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करें। यह रिपोर्ट उसके गाँव या शहर के चारों ओर 24 कि.मी. क्षेत्र से सम्बन्धित होनी चाहिए। साथ ही इस रिपोर्ट में गाँव से सम्बन्धित घरों, मार्गों, जल स्थान, नखलिस्तान तथा उस क्षेत्र में शिविर लगाने के स्थानों की सूचना सम्मिलित हो।

(2) प्रकृति अध्ययन-

- क्षेत्र के मौसम की भविष्यवाणी सम्बन्धी प्रचलित कहावतों और लोकोक्तियों की जानकारी होनी चाहिए तथा उनका संग्रह भी करना चाहिए। इन लोकोक्तियों को अपने निजी अवलोकन के आधार पर एक लॉग बुक तैयार करें।
- हवा के वेग की जानकारी हो।

(3) जल और सिंचाई-

- सिंचाई की विधियों और पानी साफ करने के तरीकों को जाने तथा दूषित जल के उपयोग से होने वाले खतरों की जानकारी रखें। पानी की कमी की स्थिति को दूर करने के लिए दी जाने वाली सरकारी सहायता की जानकारी रखें।
- क्षेत्र की मुख्य फसलों व अनाज के सिंचाई हेतु प्रयोग में आने वाली नहर या बाँध तथा पानी को मैदान में संरक्षित करने के बारे में जाने।

(4) हस्तकला-

अपने क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक सामग्री से रस्सी का एक टुकड़ा तैयार करें या एक चारपाई की बुनाई करें अथवा एक अनुकृति (मॉडल) या एक छप्पर बनाए और इसका उपयोग दिखाएं।

(5) भ्रमण (हाइक)-

- भ्रमण के माध्यम से मरुस्थलीय क्षेत्र का विशिष्ट प्राकृतिक उल्लेखनीय बातों, यथा – मृगतृष्णा और भँवरी (भुस्खलन) आदि की जानकारी प्राप्त करें।
- कम-से-कम 51 घंटे टिड्डी-विरोधी अभियान सेवा कार्य करें या किसी भी प्रकार की स्वीकृत समाज सेवा करें।





राज्य स्तरीय पञ्चांग

प्रस्तावित

गतिविधि का नाम

ऑर्गेनाइजर्स संगोष्ठी
नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियां (अमृत महोत्सव)
स्काउट गाइड झण्डा दिवस
राज्य स्तरीय कब/बुलबुल उत्सव
पुष्कर मेला सेवा शिविर
कोलायत मेला सेवा शिविर
राज्य पुरस्कार अभिशंसा शिविर

दिनांक

02 – 03 नवम्बर, 2021
01 – 04 नवम्बर, 2021
07 नवम्बर, 2021
23 – 26 नवम्बर, 2021
16 – 20 नवम्बर, 2021
16 – 20 नवम्बर, 2021
माह नवम्बर

स्थान

जगतपुरा, जयपुर
ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर
ग्रुप/स्थानीय संघ स्तर पर
झुंझुनू
पुष्कर, अजमेर
कोलायत, बीकानेर
जिला स्तर पर



राष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

NAME OF EVENTS

HWB Course for Ranger Leaders
HWB Course for Flock Leaders
1st National Level Environment Awareness Prog
HWB Course for Guide Captain
Assistant Leader Trainers Course (Guide Wing)
Scouts of World Award Discovery Workshop

MONTHS & DATES

11-17 November, 2021
11-17 November, 2021
13-17 November, 2021
19-25 November, 2021
04-10 December, 2021
16-20 December, 2021

VENUE

NTC, Pachmarhi (M.P.)
NTC, Pachmarhi (M.P.)
Jammu, J&K State
NTC, Pachmarhi (M.P.)
NTC, Pachmarhi (M.P.)
NTC, Pachmarhi (M.P.)



अन्तराष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

NAME OF EVENTS

27th Asia Pacific Regional Scout Conference
10th Asia Pacific Regional Scout Youth Forum
25th World Scout Jamboree

MONTHS & DATES

15-16, 18-19, 21 Feb.2022
09-10, 12-13 Feb. 2022
01 - 12 August, 2023

VENUE

Virtually
Virtually
Saemangeum, Korea

National Headquarters website : www.bsgindia.org

गतिविधियों की चित्रमय झलकियाँ



डेंगु मुक्त बीकानेर अभियान के तहत जागरूकता रैली निकालने को तैयार रोवर स्काउट्स



आमेत, राजसमंद में विद्यालय के स्काउट गाइड द्वारा विश्व हाथ धुलाई दिवस आयोजन

किशनगढ़, अजमेर में विश्व हाथ धुलाई दिवस के अवसर पर स्काउट्स को जागरूक करते हुए स्काउटर



श्रीमती शकुन्तला वैष्णव, राज्य संगठन आयुक्त को सेवा निवृत्ति के अवसर पर शॉल ओढ़ाते हुए श्री जे.सी. महान्ति एवं पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए श्री निर्मल पंवार



नव पदस्थापित शिक्षा निदेशक श्री कानाराम जी का अभिनन्दन करते मण्डल बीकानेर के अधिकारी



स्वच्छता अभियान में सेवाएं देते स्काउट्स

प्रकाशक व मुद्रक : रविनन्दन भनोट, राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर फोन नं. 0141-2706830 द्वारा मैसर्स प्रीमियर प्रिंटिंग प्रेस, 12 रामनगर, हवा सड़क, सोडाला, जयपुर-302019 फोन : 0141-2294887, 2295097 से मुद्रित।

हिन्दी मासिक एक प्रति ₹ पन्द्रह

प्रकाशन - प्रत्येक माह

पंजीकृत समाचार पत्रों की श्रेणी के अन्तर्गत

आर.एन.आई. नम्बर : RAJ BIL/2000/1835

प्रेषक :-

राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर-302015

फोन : 0141-2706830, 2941098

ई-मेल : scoutguidejyoti@gmail.com